सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 02, अंक 92, नई दिल्ली । गुरुवार, 13 जून 2024, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

जो लोग गिरने से डरते हैं वह कभी भी जीवन में उड़ान नहीं भर सकते।

03 अब गेट में कपड़ा फंसा तो नहीं चलेगी दिल्ली मेट्रो, दरवाजे में लगेंगे 'एंटी ड्रैग सिस्टम'

06 मेडिकल छात्रों को न्याय मिले

08 जिला स्वास्थ्य समिति की बैठक में जिला कलक्टर ने दिए दिशा निर्देश

डीटीसी के क्लस्टर बसों के ऑपरेटर्स को HC से 15 दिन की मोहलत, हजारों नौकरी का खतरा बरकरार

परिवहन विशेष न्यूज

एसडी सेठी। दिल्ली में क्लस्टर बसों का संचालन कर रहे बस ऑपरेटरों को 19 जून को खत्म हो रहे कॉंटेक्ट के मामले में हाई कोर्ट से अंतरिम राहत मिल गई है। कांट्रैक्ट की समय सीमा बढाए जाने की मांग को लेकर हाईकोर्ट पहुंचे तीन आपरेटररो की याचिका पर अदालत ने सुनवाई की ।इस मामले में दिल्ली सरकार ने जवाब दाखिल करने के लिए 15 दिन का समय मांगा है।

न्यायमूर्ति नीना बंसल कृष्णा की अवकाशप्राप्त पीठ ने कांट्रैक्ट को 15 जुलाई तक बढाने और आपरेटरो को बसों के संचालन के लिए समय सारणी उपलब्ध कराने के आदेश दिए है। इस मामले में अब 15 जुलाई को रोस्टर बैंच सुनवाई करेगी ।दिल्ली में.क्लस्टर बसों के 7 डिपो में संचालित 997 बसों का कांट्रैक्ट 19 जून को खत्म हो रहा है ।इनमें राजघाट,कैर, ढाचाऊं कलां,बीबीएम-2,सीमा पुरी,दिलशाद गार्डन और ओखला सेंट्रल वर्कशाप शामिल है ।इन डिपो से 997 बसों का संचालन रोजाना होता है ।बस को संचालन करने वाली 3 कंपनी ने इसी

साल फरवरी महीने में दिल्ली हाईकोर्ट में याचिका दाखिल की थी ।इसमें उन्होंने कांट्रैक्ट की अवधि बढाए जाने की मांग की थी ।हाईकोर्ट ने तब उनकी याचिका खारिज कर दी थी। इसके बाद मैट्रो ट्रांजिट प्राईवेट लिमिटेड, एंटोनियो ट्रांसपोर्ट सोल्यूशन प्राईवेट लिमिटेड और गोवर्धन ट्रांसपोर्ट कंपनी प्राईवेट लिमिटेड की ओर से कांट्रैक्ट की अवधि बढाए जाने की मांग के लिए 5 जून को दोबारा याचिका दाखिल की गई थी। अदालत ने इस पर बीती 10 जून को सुनवाई की थी ।दिल्ली सरकार ने अदालत में कहा कि इस मामले में अपना जवाब दाखिल करने के लिए उन्हें 15 दिन की मोहलत दी जाए। उल्लेखनीय है कि इस मामले में 5 डिपो के बस कंडक्टरों का विरोध जारी है। कंडक्टरों का कहना है कि कांट्रैक्ट खत्म होने बाद उन्हें नौकरी से निकाल दिया जाएगा। उनका दर्द है कि कांट्रैक्ट का महज 1 महीना बढ जाने से उनकी समस्या का समाधान नही हुआ है ।उन्हें नौकरी के बदले नौकरी दिलाई जाए। बता दें कि क्लस्टर बसों के हजारो स्टाफ कंपनी केकांट्रैक्ट खत्म होने की वजह से पक्के इंप्लाइज तक बेरोजगार हो गए है।

मेवला महाराजपुर अंडरपास, फरीदाबाद: यातायात उल्लंघन का हॉट स्पॉट

परिवहन विशेष न्यूज

फरीदाबाद में स्थित मेवला मेहराजपुर अंडरपास हाल ही में यातायात उल्लंघनों का एक प्रमुख केंद्र बन गया है। यह समस्या तब तक बनी रहेगी जब तक कड़े नियम लागू नहीं किए जाते। गलत दिशा में वाहन चलाना न केवल अवैध है, बल्कि यह एक गंभीर खतरा भी पैदा कर सकता है।

लगभग एक महीने पहले परिवहन विशेष ने इस समस्या पर एक रिपोर्ट प्रकाशित की थी। इसके बाद, अधिकारियों ने गलत यू-टर्न को रोकने के लिए बैरिकेडिंग की व्यवस्था की। लेकिन धीरे-धीरे, नियमों की अवहेलना फिर से अपने चरम पर पहुंच गई। यह समस्या केवल कठोर प्रवर्तन के माध्यम से ही सुलझाई जा सकती है।

मेवला मेहराजपुर अंडरपास पर यातायात को एक दिशा में ही जाने देने या किसी भी दिशा में जाने के लिए पूरी तरह से मुक्त करने की आवश्यकता है। यह समस्या केवल इस अंडरपास तक सीमित नहीं है। एनएचपीसी चौक पर भी यही स्थिति है, जहां लोग गलत दिशा में टर्न लेते हैं। हालाँकि, पुलिस की उपस्थिति में कोई भी नियमों का उल्लंघन करने की हिम्मत नहीं करता।

यह स्पष्ट है कि जब तक पुलिस और प्रशासन कड़े नियमों का पालन नहीं करेंगे और उल्लंघनकर्ताओं पर जुर्माना नहीं लगाएंगे, तब तक यह समस्या बनी रहेगी। इसके लिए जागरूकता अभियान चलाना और लोगों को यातायात नियमों के महत्व के बारे में बताना भी आवश्यक है।

फरीदाबाद में यातायात व्यवस्था को सुधारने के लिए प्रशासन को सख्त कदम उठाने होंगे ताकि दुर्घटनाओं की संख्या को कम किया जा सके और शहर की सड़कों को सुरक्षित बनाया जा सके।

गुरुग्राम सेक्टर 56 के निकट सड़कों की दुर्दशा, दो हफ्तों से जलभराव की समस्या

परिवहन विशेष न्यूज

गुरुग्राम के सेक्टर 56 के निकट सड़कों की हालत बेहद खराब हो गई है। पिछले दो हफ्तों से अधिक समय से लगातार जलभराव और गंदे पानी के बहाव के कारण सड़कें पूरी तरह से क्षतिग्रस्त हो चुकी हैं। स्थानीय निवासियों का कहना है कि इस जलभराव की वजह से सड़कें अब खतरनाक हो गई हैं और इससे कई सड़क दुर्घटनाएं होने का खतरा बढ़ गया है।

जलभराव की समस्या के कारण वाहन चालकों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। गंदे पानी के बहाव से सड़क पर बड़े-बड़े गड्ढे बन गए हैं, जिससे दुर्घटनाओं की संभावना बढ़ गई है। स्थानीय लोग इस समस्या को लेकर बेहद चिंतित हैं और उन्होंने संबंधित अधिकारियों और संबंधित हितधारकों से इस मामले पर तुरंत कार्रवाई करने की मांग की है।

स्थानीय निवासी ने बताया, ₹हम पिछले दो हफ्तों से लगातार इस समस्या का सामना कर रहे हैं। गंदा पानी पूरे सड़क पर फैल गया है और सड़कें पूरी तरह से टूट चुकी हैं। हम अपनी सुरक्षा को लेकर बेहद चिंतित हैं और चाहते हैं कि इस समस्या का समाधान जल्द से जल्द हो।"

एक अन्य निवासी, ने कहा, "यहां के सड़क की स्थिति बहुत ही खराब हो चुकी है। हर दिन दुर्घटना का डर बना रहता है। हम स्थानीय प्रशासन से अपील करते हैं कि वे तुरंत इस मुद्दे पर ध्यान दें और सड़कों की मरम्मत करवाएं।"

सड़क की इस स्थिति को देखते हुए, यह आवश्यक है कि संबंधित अधिकारी और हितधारक इस मामले को प्राथमिकता दें और तुरंत कार्रवाई करें। सड़क की मरम्मत और जलनिकासी की उचित व्यवस्था की जाए ताकि स्थानीय निवासियों को इस समस्या से राहत मिल सके और कोई भी सड़क दुर्घटना न हो।

स्थानीय प्रशासन से अनुरोध है कि वे जल्द से जल्द इस समस्या का समाधान करें और सड़क सुरक्षा सुनिश्चित करें। यह समय की मांग है कि सड़कों की मरम्मत और जलभराव की समस्या का समाधान प्राथमिकता के आधार पर किया जाए ताकि लोगों को इस समस्या से निजात मिल सके।

महिलाओं के लिए सेल्फ केयर जरूरी, इस तरह रखें खुद का ख्याल, जान लें ये 5 आसान तरीके, बेहतर महसूस करेंगी आप

अगर आप ये सोचती हैं कि सेल्फ केयर का मतलब सेल्फिश होना है तो आपकी ये सोच गलत है. यही नहीं, सेल्फ केयर का मतलब लग्जरी लाइफस्टाइल जीना भी नहीं है. अगर आप टॉक्सिक माहौल से खुद को बचाए रखें या खुद को नकारात्मक बातों के असर से दूर रखें तो ये भी सेल्फ केयर करने के तरीके हैं.

अगर आप ये सोचती हैं कि सेल्फ केयर का मतलब सेल्फिश होना है तो आपकी ये सोच गलत है. यही नहीं, सेल्फ केयर का मतलब लग्जरी लाइफस्टाइल जीना भी नहीं है. अगर आप टॉक्सिक माहौल से खुद को बचाए रखें या खुद को नकारात्मक बातों के असर से दूर रखें तो ये भी सेल्फ केयर करने के तरीके हैं.

अक्सर लोगों को यह लगता है कि सेल्फ केयर का अर्थ केवल खुद की परवाह करना है. यह परवाह दरअसल खुद को बुरे माहौल से बचाना कहा जा सकता है. कई महिलाएं घर-परिवार के सदस्यों का केयर करते करते खुद की परवाह करना छोड़ देती हैं और अपनी जरूरतों को अनदेखा करने लगती हैं. उनकी यह आदत धीरे-धीरे मानसिक और शारीरिक सेहत को प्रभावित करने लगती है, जो बाद में काफी मुश्किल पैदा कर सकता है. यहां हम बता रहे हैं कि आप छोटी-छोटी चीजों की मदद से अपना ख्याल रख सकती हैं और सेल्फ केयर कर सकती हैं.

महिलाएं इस तरह करें सेल्फ केयर

उठते ही पिएं पानी

वूमन्स हेल्थ के मुताबिक, सुबह उठकर पानी पीना बहुत ही जरूरी है. अगर आप सुबह सुबह उठते ही कम से कम एक ग्लास पानी पिएं तो इससे रातभर पानी की कमी को पूरा किया जा सकता है और आप दिन की शुरुआत एनर्जी के साथ कर पाती हैं.

अच छी चीजों को करें याद

सुबह उठते ही अपने 5 अचीवमेंट्स या पॉजिटिव चीजों को एक बार जरूर याद करें. मसलन, आपके पास घर है, गाड़ी है, आप पढ़ी लिखी हैं, आपके जीवन में गोल है और भगवान ने मेहनत करने के लिए आपको दो पैर, दो हाथ और दो आंखें दी हैं.

वीकली मेन्यू बनाएं

आप वीकली मेन्यू बनाएं और हेल्दी डाइट की आदत डालें. ऐसा करने से आपको रोज रोज खाने की चिंता नहीं करनी होगी और आपके पास एक प्लान होगा, जिसे बस आपको फॉलो करना होगा. इस तरह आप ग्रॉसरी शॉपिंग भी बेहतर तरीके से कर पाएंगी.

योगा क लास करें ज्वाइन

आपके पास कुछ सबसे अपना है तो वो है आपकी बॉडी. आप अपनी बॉडी का खयाल रखें और इसके लिए एक्टिव लाइफ जियें. अगर आप योगा क्लास ज्वाइंन करती हैं तो इससे आपका मेंटल और फिजिकल हेल्थ अच्छा रहेगा.

नींद करें पूरी

जब आप सोते हैं तो ब्रेन टॉक्सिक चीजों से आपको रिलैक्स करता है और आप मेंटली तेजी से हील कर पाती हैं. इसलिए गहरी नींद लें और समय पर सोएं और समय पर जाएं. नींद से समझौता बिल्कुल ना करें.

इन आदतों को भी अपनाएं

–नकारात्मक चीजों को आप डायरी में लिखें और अपनी भावना व्यक्त करें.

–घर में आप डांस करें और म्यूजिक सुनें.

–खुद के लिए सुबह में 5 मिनट निकालें और अपना फेवरेट काम करें.

–सुबह मुस्कुराहत के साथ उठें और ओम शब्द का उच्चारण करें.

जल है तो कल है

पानी की बर्बादी रोकने के 18 तरीके जिन पर आपने ध्यान नहीं दिया!

हम हमेशा से सुनते आये हैं "जल ही जीवन है" जल के बिना जीवन की कल्पना भी मुश्किल है जीवन के सभी कार्यों का निष्पादन करने के लिये जल की आवश्यकता होती है।

कवि एवं सन्त रहीम दास जी ने सदियों पहले पानी का महत्व बता दिया था किन्तु हम आज भी जल संरक्षण के प्रति गम्भीर नहीं हैं।

रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून।
पानी गये ना ऊबरे, मोती मानुष चून।

कैसे बचाएं पानी:

1 जल संसाधन
2 जल सरंक्षण की आवश्यकता क्यों है ?
3 जल संरक्षण कैसे बचाएं पानी ?

जैसे जैसे गर्मी बढ़ रही है देश के कई हिस्सों में पानी की समस्या विकराल रूप धारण कर रही है। प्रतिवर्ष यह समस्या पहले के मुकाबले और बढ़ती जाती है। लातूर जैसी कई जगह तो पानी की कमी की वजह से हालात अत्यन्त भयावह हो रहे हैं। लेकिन हम हमेशा यही सोचते हैं बस जैसे तैसे गर्मी का सीजन निकल जाये, बारिश आते ही पानी की समस्या दूर हो जायेगी और यह सोचकर जल सरंक्षण के प्रति बेरुखी अपनाये रहते हैं।

किन्तु आज मानव जाति के लिये जल संरक्षण अत्यन्त महत्वपूर्ण हो गया है। यदि अब भी हम लोग जल सरंक्षण के प्रति गम्भीर नहीं हुए तो यह बात बिलकुल सही साबित होगी कि-

तीसरा विश्व युद्ध पानी के लिये होगा।

जल संसाधन :

जल संसाधन पानी के वह स्रोत हैं जो मानव जाति के लिये उपयोगी हैं या जिनके उपयोग में आने की सम्भावना है। पूरे विश्व में धरती का लगभग तीन चौथाई भाग जल से घिरा हुआ है किन्तु इसमें से 97% पानी खारा है जो पीने योग्य नहीं है, पीने योग्य पानी की मात्रा सिर्फ 3% है। इसमें भी 2% पानी ग्लेशियर एवं बर्फ के रूप में है। इस प्रकार सही मायने में मात्र 1% पानी ही मानव के उपयोग हेतु उपलब्ध है।

जल के स्रोतों को हम तीन भागों में विभाजित कर सकते हैं –

1. धरातल के ऊपर से प्राप्त जल – यह बारिश का जल है जो शुद्ध होता है किन्तु सतर्कता ना रखने पर जमीन पर आते आते इसमें कई प्रकार की अशुद्धियाँ घुलने का डर रहता है।

2. धरातलीय जल – नदी, तालाब, झील, झरने आदि धरातलीय जल के प्रकार हैं।

3. अन्तः धरातलीय जल – कच्चे तथा पके कुएं, बावड़ी, बोरिंग आदि।

जल सरंक्षण की आवश्यकता क्यों है ?

जनसंख्या वृद्धि, शहरीकरण तथा औधोगिकीकरण के कारण प्रति व्यक्ति के लिये उपलब्ध पेयजल की मात्रा लगातार कम हो रही है जिससे उपलब्ध जल संसाधनों पर दबाव बढ़ता जा रहा है। जहाँ एक ओर पानी की मांग लगातार बढ़ रही है वहीं दूसरी ओर प्रदूषण और मिलावट के कारण उपयोग किये जाने वाले जल संसाधनों की गुणवत्ता तेजी से घट रही है।

साथ ही भूमिगत जल का स्तर तेजी से गिरता जा रहा है ऐसी स्तिथि में पानी की कमी की पूर्ति करने के लिये आज जल संरक्षण की नितान्त आवश्यकता है।

सम्पूर्ण विश्व में 22 मार्च को विश्व जल दिवस मनाया जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य लोगों को जल संरक्षण के प्रति जागरूक करना है।

अटल जी कहा करते थे–

यदि हम लोग जल संरक्षण के प्रति गम्भीर नहीं हुए तो तीसरा विश्व युद्ध पानी के लिये होगा।

और अब यह बात बिलकुल सही लगने लगी है।

जल संरक्षण के उपाय:

जल संरक्षण आज विश्व की सर्वोपरि प्राथमिकताओं में से होनी चाहिये। जल संरक्षण हमे घर में, घर के बाहर, बाग़ बगीचों, खेत खलिहान हर जगह करना चाहिये।

1. घरेलू जल सरंक्षण

दाढ़ी बनाते समय, ब्रश करते समय, सिंक में बर्तन धोते समय, नल तभी खोलें जब सचमुच पानी की ज़रूरत हो।

गाड़ी धोते समय पाइप की बजाय बाल्टी व मग का प्रयोग करें, इससे काफी पानी बचता है।

नहाते समय शॉवर की बजाय बाल्टी एवं मग का प्रयोग करें, काफी पानी की बचत होगी। इस काम के लिए आप भारत रत्न सचिन तेंदुलकर से प्रेरणा ले सकते हैं जो सिर्फ १ बाल्टी पानी से ही नहाते हैं।

वाशिंग मशीन में रोज-रोज थोड़े-थोड़े कपड़े धोने की बजाय कपड़े इकट्ठे होने पर ही धोएं।

ज़्यादा बहाव वाले फ्लश टैंक को कम बहाव वाले फ्लश टैंक में बदलें। सम्भव हो तो दो बटन वाले फ्लश का टैंक खरीदें। यह पेशाब के बाद थोड़ा पानी और शौच के बाद ज़्यादा पानी का बहाव देता है।

जहाँ कहीं भी नल या पाइप लीक करे तो उसे तुरन्त ठीक करवायें। इसमें काफी पानी को बर्बाद होने से रोका जा सकता है।

बर्तन धोते समय भी नल को लगातार खोले रहने की बजाये अगर बाल्टी में पानी भर कर काम किया जाए तो काफी पानी बच सकता है।

2. घर के बाहर जल संरक्षण

सार्वजनिक पार्क, गली, मौहल्ले, अस्पताल, स्कूलों आदि में जहाँ कहीं भी नल की टोंटियाँ खराब हों या पाइप से पानी लीक हो रहा हो तो तुरन्त जलदाय ऑफिस में या सम्बन्धित व्यक्ति को सूचना दें, इसमें हजारों लीटर पानी की बर्बादी रोकी जा सकती है।

बाग़ बगीचों एवं घर के आस पास पौधों में पाइप से पानी देने के बजाय वाटर कैन द्वारा पानी देने से काफी पानी की बचत हो सकती है

बाग़ बगीचों में दिन की बजाय रात में पानी देना चाहिये। इससे पानी का वाष्पीकरण नहीं हो पाता। कम पानी से ही सिंचाई हो जाती है।

सिंचाई क्षेत्र हेतु कृषि के लिये कम लागत की आधुनिक तकनीकों को अपनाना जल सरंक्षण हतु उपयोगी है।

3. वृक्षा रोपण / Plantation

वृक्ष हमारे अभिन्न मित्र हैं ये हमें छाया, फल, लकड़ी प्रदान करते हैं जमीन का कटाव रोकते हैं, बाढ़ से सुरक्षा करते हैं। जहाँ ज़्यादा वृक्ष होते हैं वहां अच्छी बारिश होती है जिससे बारिश में नदी नाले भर जाते हैं और पानी की कमी नहीं हो पाती। इसलिए लगातार वृक्षा रोपण करते रहना चाहिये।

4. जल संरक्षण हेतु कानून

कई क्षेत्रों में बिना रोकथाम के पानी निकालने से भूजल के स्तर में भारी गिरावट आ जाती है। इसके लिये भूजल के वितरण प्रबन्धन नियमों का पालन करना जरूरी है। साथ ही नए कानून बनाने की ज़रूरत है जो किसी भी प्रकार के वाटर वेस्टेज को एक गैर-कानूनी काम के रूप में देखें और ऐसा करने वालों को जुरमाना और सजा देने का प्रावधान करें।

5. औधोगिक क्षेत्र में नई तकनीक

पानी की जरूरत को कम करने के लिये औद्योगिक क्षेत्र, कारखानों आदि में आधुनिक तकनीक को प्रयोग में लेना चाहिये।

6. वर्षा जल संचयन / Rain water harvesting

हम लोगों की अकेली यह आदत ही जल संरक्षण हेतु मील का पत्थर साबित हो सकती है। एक बारिश के बाद अगली बारिश से छतों से वर्षा जल का संचय करें। यह पीने, कपड़े धोने, बागवानी आदि सभी कार्यों हेतू उत्तम है। इसके लिये गाँव, शहरों में भवन निर्माण सम्बन्धी नियमों में वर्षा जल संचयन को अनिवार्य किया जाना चाहिये तथा लोगों को वर्षा जल संचय हेतु प्रोत्साहित किये जाने वाले उपाय ढूंढे जाने चाहियें।

7. जल जागरूकता कार्यक्रम

पानी की बर्बादी रोकने, वर्षा जल का संचयन करने, लगातार वृक्षारोपण करने तथा पानी को प्रदुषण से बचाने हेतु लगातार जागरूकता कार्यक्रम चलाते रहना चाहिये और यह प्रयास हम सबको मिलकर करना चाहिए।

8. वाटर ओवरफ्लो अलार्म लगाएं

छतों पर लगी टंकियों से पानी गिरकर बर्वाद होना एक आम दृश्य है। हमें इसे रोकना होगा और इसके लिए सबसे सरल उपाय है कि आप अपनी टंकी को एक water overflow alarm से जोड़ दें।

9. Flush के अन्दर पानी की बोतल में बालू-कंकड़ भर कर डाल दें

अमूमन फ्लश से ज़रूरत से अधिक पानी बहता है, इसलिए अगर आप उसमे 1लीटर की बोतल में बालू-कंकड़ आदि भर के डाल देते हैं तो हर एक फ्लश पर आप 1 लिटर पानी बचा सकते हैं और पूरे वर्ष में हज़ारों लीटर पानी बचाया जा सकता है।

फ्लश से रिलेटेड इस बात पर भी ध्यान दें कि कहीं फ्लश का नौब पूरी तरह से न उठने के कारण वो leak तो नहीं हो रहा है। कई बार इस कारण से रात भर में पूरी टंकी खाली हो जाती है।

10. Water Supply के पानी को अपना पानी समझें

जो लोग भाग्यशाली हैं उनके घरों में सरकार की तरफ से वाटर-सप्लाई का पानी भी आता है। देखा गया है कि अक्सर लोग लगभग मुफ्त में मिलने वाले इसे पानी को बहुत अधिक बर्बाद करते हैं। वे इसे क्यारी में लगा कर छोड़ देते है (बरसात के मौसम में भी) अपने कूलर में पानी भरने के लिए लगा कर भूल जाते हैं या वाशिंग मशीन में लगा कर छोड़ देते हैं और चूँकि ये पाने टाइम-टाइम से आता है, इसलिए कई बार लोग टोटियां खुली छोड़ कर बाकी काम में व्यस्त हो जाते हैं और जब पानी आने का टाइम होता है तो पानी बस यूँ ही गिरता रहता है।

इन लापरवाहियों की वजह से वे एक ही दिन में सैकड़ों लीटर पानी बर्बाद कर देते हैं। वहीँ दूसरी और वे अपनी टंकियों में भरे पानी को लेकर बहुत सजग होते हैं। यदि आप भी ऐसे लोगों में शामिल हैं तो कृप्या ऐसा करना बंद करें। पानी तो पानी है, इसमें सरकारी और अपने का भेद नहीं करना चाहिए।

11. उतना ही पानी लें जितना पीना है

जब आप 1 glass RO water पीते हैं तो ध्यान रखिये कि इसे फ़िल्टर करने के प्रोसेस में 3 glass पानी waste किया जाता है। इसलिए जब भी आप गिलास में RO वाटर लें तो पूरा भर के लेने की बजाये उतना ही लें जितना पीना है और किसी को देना भी हो तो उसे पानी ग्लास में भर कर देने की बजाये जग या water bottle के साथ गिलास दे सकते हैं। इस तरह से काफी पानी बचाया जा सकता है।

आप RO वाटर के स्थान पर घड़ों के पानी का प्रयोग करें जो सेहत के लिए उत्तम तो है ही साथ में बहुत से पानी को भी बचाएगा।

यदि आप किसी रेस्टोरेंट में जाते हैं तो सबसे पहले वेटर पानी ला कर रख देता है, तब भी जब आपको उसकी ज़रूरत न हो! इसलिए जब आप ऐसी जगह जाइए तो तभी पानी लीजिये जब वाकई में आपको उसकी आवश्यकता हो।

12. RO Machine या AC से निकलने वाले waste water को उपयोग करें

RO machine द्वारा लिए गए कुल पानी का 75% part waste हो जाता है। इसलिए कोशिश करिए कि मशीन की वास्ते पाइप से जो पानी निकला रहा है उसे बकेट में इकठ्ठा कर लिया जाए या पाइप लम्बी करके उसे पौधों को सींचने के काम में लाया जाये। इसी तरह AC से निकलने वाले पानी को भी सही तरीके से इस्तेमाल किया जा सकता है।

13. Hand-Pump का प्रयोग करें

पहले के जमाने में लोग हैण्ड पंप का ही प्रयोग करते थे। इस वाजह से पानी की बर्बादी बहुत कम होती थी, जिसको जितनी ज़रूर होती थी वो उतना ही पानी निकालता था। पर समय के साथ लोग मोटर से पानी भरने लगे और हैण्ड पंप को भूल गए। यदि आपके यहाँ हैण्ड पंप लगा ही न हो तो कोई बात नहीं लेकिन अगर लगा है और बेकार पड़ा है तो उसे ठीक करा कर कभी-कभार प्रयोग करें। अच्छा होगा अगर हम intentionally हफ्ते का एक दिन सिर्फ हैण्ड पंप use करके पानी निकालें। ऐसा करने से कम से कम एक दिन हम सिर्फ उतना ही पानी निकालेंगे जितने की हमें सचमुच ज़रूरत है।

14. सब्जियां-फल किसी बर्तन में धोएं

कई बार लोग सब्जियों और फलों को running water से धोते हैं, अगर इसकी जगह आप किसी बड़े भगौने या बर्तन में पानी भर कर सब्जियां धोएँगे तो पानी भी कम लगेगा और वो ठीक से साफ़ भी हो पाएंगी।

15. Wash-basin का फ्लो कम कर दें

वाश बेसिन के नीचे भी पानी कण्ट्रोल करने के लिए एक टोटी लगी होती है, अकसर वो पूरी खुली होती है, अगर आप उसे थोड़ा सा घुमा देंगे तो पानी का फ्लो अपने आप कुछ कम हो जाएगा और काफी पानी बर्वाद होने से बच पायेगा।

16. Bathroom में एक-आध बाल्टी एक्स्ट्रा रखें

अकसर गर्मियों के दिनों में टंकी का पानी बहुत गरम हो जाता है और लोग नहाते समय पहले कुछ पानी गिरा देते हैं कि उसके बाद ठंडा पानी आने लगे। ऐसा करना पड़े तो पानी गिराने की बजाये किसी बाल्टी में भर कर रख लें। और बेहतर तो ये होगा कि सुबह के टाइम ही आप बाल्टियों में पानी भर कर रख लें ताकि नहाते वक्त आपको ठंडा पानी मिल सके।

17. प्लम्बर का हल्का-फुल्का काम खुद सीखें

अकसर देखा जाता है कि घर में मौजूद पानी के taps टपकते रहते हैं और हम उसे यूँही ignore करते रहते हैं क्योंकि हम आलस में प्लम्बर को बुलाते नहीं या ये सोचते हैं कि अगर प्लम्बर को बुलायेंगे तो वो अनाप-शनाप पैसे मांगेगा और हम खुद उसे ठीक करने की हिम्मत नहीं दिखाते। लेकिन अगर हम plumbing के बेसिक सामान घर पे रखें और खुद ही छोटी-मोटी चीजें ठीक करना सीख लें तो हम बहुत सारा पानी बर्वाद होने से रोक सकते हैं। मेरी तो सलाह है कि हमें स्कूलों में बच्चों को plumbing से रिलेटेड बेसिक काम ज़रूर सिखाने चाहिए।

18. जो भी पानी बर्वाद करता है उसे रोकें

AKC पर कुछ महीनों पहले एक पोस्ट शेयर की गयी थी – प्लेट में खाना छोड़ने से पहले Ratan Tata का ये संदेश ज़रूर पढ़ें!

जिसमें उन्होंने जर्मनी के एक रेस्टोरेंट का अनुभव बताया था जिसमें खाना वेस्ट करने पर वहां के नागरिकों ने आपत्ति जताई थी कि भले आपने पैसे देकर खाना खरीदा हो, फिर भी आप उसे बर्बाद नहीं कर सकते क्योंकि भले पैसा आपका है पर संसाधन देश के हैं !

और यही बात हम Indians को भी समझनी होगी। पानी की बर्बादी सिर्फ उसे बर्वाद करने वाले को ही नहीं बल्कि पूरे समाज को प्रभावित करती है। अगर आपका पड़ोसी पानी बर्बाद करता है तो आपका भी वाटर-लेवल कम होता है। इसलिए इस अनमोल संसाधन को न waste करिए और न waste करने दीजिये।

आइये जल बचाएँ, "क्योंकि जल होगा तो कल होगा।"

पानी बचाओ व जल संरक्षण पर अनमोल विचार व नारे

#1 Give me water and I will give you life.
तुम मुझे जल दो मैं तुम्हे जीवन दूंगा।

#2 Conserve water, conserve life.
पानी का संरक्षण करें, जीवन का संरक्षण करें।

#3 You never know the worth of water until the well runs dry.
आप तब तक पानी की कीमत नहीं समझते जब तक कुंएं सूख नहीं जाते।

प्रदीप महाजन

अब गेट में कपड़ा फंसा तो नहीं चलेगी दिल्ली मेट्रो, दरवाजे में लगेंगे 'एंटी ड्रैग सिस्टम'; इन दो लाइनों पर मिलेगी सर्विस

दिल्ली मेट्रो में यात्रा करने वाले यात्रियों को डीएमआरसी जल्द ही एक और सुविधा देने जा रहा है। दरअसल अब ट्रेन के दरवाजों में एंटी ड्रैग सिस्टम लगेंगे। पायलेट परियोजना के रूप में अभी रेड और ब्लू लाइन की पांच मेट्रो ट्रेनों में यह सिस्टम लगेगा। बाद में दूसरी जगहों पर लगया जाएगा। इंद्रलोक मेट्रो स्टेशन पर दिसंबर में दरवाजे में कपड़ा फंसने से महिला की मौत हो गई थी।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। पिछले वर्ष दिसंबर में इंद्रलोक मेट्रो स्टेशन पर मेट्रो के दरवाजे में कपड़ा फंसने से महिला की मौत की घटना के मद्देनजर दिल्ली मेट्रो रेल निगम (डीएमआरसी) मेट्रो ट्रेनों के दरवाजे में एंटी ड्रैग सिस्टम लगाएगा। इससे मेट्रो के दरवाजों के बीच रूमाल, साड़ी, बेल्ट या कोई भी चीज फंसने पर मेट्रो आगे नहीं बढ़ पाएगी।

इससे भविष्य में इंद्रलोक मेट्रो स्टेशन जैसी घटनाओं को रोका जा सकेगा। डीएमआरसी ने पायलेट परियोजना के रूप में अभी रेड व ब्लू लाइन की पांच मेट्रो ट्रेनों के 40 कोच के दरवाजों में यह सिस्टम लगाने की प्रक्रिया शुरू की है।

इसके लिए डीएमआरसी (DMRC News) ने टेंडर प्रक्रिया शुरू की है। करीब साढ़े तीन करोड़ रुपये की लागत से रेड लाइन की तीन ट्रेन और ब्लू लाइन के दो ट्रेनों के दरवाजों में एंटी ड्रैग सिस्टम लगेगा। टेंडर आवंटन के बाद 15 महीने में कार्य पूरा होगा। योजना के अनुसार दो तरह के एंटी ड्रैग सिस्टम लगेंगे। पहला स्टेटिक एंटी ड्रैग और दूसरा डायनेमिक एंटी ग्रैग सिस्टम होगा।

क्या है स्टेटिक एंटी ड्रैग सिस्टम

स्टेटिक एंटी ड्रैग सिस्टम का सेंसर पांच मिलीमीटर तक की पतली चीजों को भी पकड़ने में सक्षम होगा। इसलिए मेट्रो के दरवाजों में पांच मिलीमीटर मोटाई की कोई भी चीज फंसने पर यह ट्रेन को प्लेटफार्म से आगे नहीं बढ़ने देगा और दरवाजे पर लगी लाइट ब्लिंक करने लगेगी।

डायनेमिक एंटी ड्रैग सिस्टम

मेट्रो के दरवाजों के बीच में 0.8 मिलीमीटर की पतली चीजें भी फंसने पर यह सिस्टम सक्रिय हो जाएगा। इससे मेट्रो के खुलने पर इमरजेंसी ब्रेक लगने से ट्रेन आगे नहीं बढ़ पाएगी। इसलिए मेट्रो के दरवाजों में रूमाल, साड़ी, बैग का फीता इत्यादि फंसने पर एंटी ड्रैग सिस्टम का सेंसर यात्री की सुरक्षा के लिए अहम साबित होगा। मौजूदा समय में मेट्रो के दरवाजे में 15 मिलीमीटर तक की कोई चीज फंसने पर ही दरवाजे बंद नहीं हो पाते हैं।

उल्लेखनीय है कि पिछले वर्ष 14 दिसंबर को रेड लाइन के इंद्रलोक स्टेशन पर मेट्रो के दरवाजे में एक महिला की साड़ी फंस गई थी। इस वजह से महिला मेट्रो के साथ करीब 200 मीटर घसीटती चली गई थी।

इस वजह से गंभीर चोट लगने के कारण अस्पताल में उसकी मौत हो गई थी। इस घटना के बाद मेट्रो रेल संरक्षा आयुक्त की सिफारिश पर केंद्रीय शहरी विकास मंत्रालय ने मेट्रो के दरवाजों में एंटी ड्रैग सिस्टम लगाने का निर्देश दिया था।

बिभव कुमार ने अब दिल्ली हाईकोर्ट का खटखटाया दरवाजा, निचली अदालत के इस फैसले को दी चुनौती

राज्यसभा सदस्य स्वाति मालीवाल से मारपीट मामले में मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल (Bibhav Kumar) के निजी सहायक बिभव कुमार ने जमानत देने से इनकार करने के निचली अदालत के निर्णय के विरुद्ध दिल्ली हाईकोर्ट का रुख किया है। कुमार को 27 मई को तीस हजारी अदालत ने जमानत देने से इनकार कर दिया था। उनकी दूसरी नियमित जमानत याचिका सात जून को सत्र अदालत ने खारिज कर दी थी।

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी (AAP) की राज्यसभा सदस्य स्वाति मालीवाल से मारपीट मामले में मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल (Bibhav Kumar) के निजी सहायक बिभव कुमार ने जमानत देने से इनकार करने के निचली अदालत के निर्णय के विरुद्ध दिल्ली हाईकोर्ट का रुख किया है। कुमार को 27 मई को तीस हजारी अदालत ने जमानत देने से इनकार कर दिया था। उनकी दूसरी नियमित जमानत याचिका सात जून को सत्र अदालत ने खारिज कर दी थी। अधिवक्ता करण शर्मा और रजत भारद्वाज के माध्यम से याचिका दायर कर बिभव ने नियमित जमानत देने की मांग की है। कुमार ने याचिका में कहा कि यह आपराधिक मशीनरी के दुरुपयोग और जांच में धोखाधड़ी का एक उत्कृष्ट मामला है।

बिभव कुमार ने क्या दिया तर्क

बिभव ने तर्क दिया कि उन्होंने व स्वाति मालीवाल ने एक-दूसरे के खिलाफ शिकायत की है लेकिन जांच केवल उनके मामले की हो रही है। उन्होंने यह भी कहा कि ऐसा सिर्फ इसलिए हो रहा है, क्योंकि राज्यसभा सदस्य होने के नाते स्वाति एक प्रभावाली व्यक्ति हैं। बिभव कुमार ने दलील दी है कि मालीवाल के विरुद्ध उनकी शिकायत पर कोई जांच नहीं की जा रही है।

निचली अदालत को लेकर क्या कहा

याचिका में यह भी कहा गया कि निचली अदालत जमानत अस्वीकृति आदेश पारित करते समय इस तथ्य पर विचार करने में विफल रही कि उपरोक्त प्राथमिकी के संबंध में सभी साक्ष्य जांच अधिकारी द्वारा एकत्र किया गया है और गवाहों के बयान भी दर्ज किए हैं। ऐसे में उन्हें हिरासत में रखने की आवश्यकता नहीं है और इससे कोई उद्देश्य पूरा नहीं होगा। कुछ समय पहले कुमार ने मामले में अपनी गिरफ्तारी को चुनौती देते हुए हाईकोर्ट में याचिका दायर की थी। उक्त याचिका पर सभी पक्षों को सुनने के बाद न्यायमूर्ति स्वर्ण कांता शर्मा की ने अपना निर्णय सुरक्षित रख लिया था। मालीवाल के विरुद्ध स्वाति मालीवाल की लिखित शिकायत पर दर्ज की गई थी। उनकी शिकायत पर बिभव को 18 मई को गिरफ्तार किया गया था। दिल्ली पुलिस ने आरोप लगाया कि कुमार जांच के दौरान हमेशा असहयोग करते रहे और सवालों के गोल-मोल जवाब देते रहे।

असिता ईस्ट में लगी भीषण आग, 30 एकड़ हरित क्षेत्र जलकर खाक, जताई जा रही ये आशंका

पूर्वी दिल्ली के असिता ईस्ट के पिछले हिस्से में आग लग गयी। आज शाम सवा पांच बजे आग लगी थी। बताया जा रहा है असिता ईस्ट के इस पिछले हिस्से में असामाजिक तत्व नशा करते हैं जिसके बाद यहां माचिस से आग लगा देते हैं। मौके पर आठ दमकल की गाड़ियों ने दो घंटे में काबू पाया। इस अग्निकांड में 30 एकड़ हरित क्षेत्र जलकर खाक हो गया।

पूर्वी दिल्ली। यमुनापार के प्राकृतिक उपहार कहे जाने वाले असिता ईस्ट में बुधवार शाम को भीषण आग लग गई। इससे आसपास के इलाकों में धुंए का गुबार उठने लगा। दमकल विभाग के वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि करीब सवा पांच बजे खादर क्षेत्र की झाड़ियों व हरित क्षेत्र में आग लगने की सूचना मिली थी।

आठ दमकल की गाड़ियों ने दो घंटे में पाया आग पर काबू

मौके पर पहुंची दमकल की आठ गाड़ियों ने सवा दो घंटे यानि साढ़े सात बजे तक आग पर काबू पा लिया। गनीमत रही कि किसी प्रकार की कोई हताहत नहीं है। आग लगने के कारणों का स्पष्ट रूप से पता नहीं चला है। इस मामले में दिल्ली विकास प्राधिकरण के अधिकारियों ने बताया कि आग लगने से करीब 30 एकड़ का हरित क्षेत्र और अर्जुन, जामुन जैसे देशी पेड़-पौधे जलकर खाक हो गए हैं। वहीं आग के धुएं से पक्षियों को भी सांस लेने में दिक्कत हुई।

असिता ईस्ट पुराने लोहे के पुल से आइटीओ बैराज तक फैला हुआ है। इसका कुल क्षेत्रफल 197 हेक्टेयर है। 90 हेक्टेयर हिस्सा डीडीए के अंतर्गत है और शेष हिस्सा उत्तर प्रदेश सिंचाई विभाग के पास है। बुधवार शाम को ललिता पार्क के पास वाले हिस्से की झाड़ियों में आग लग गई। इससे असिता ईस्ट के पीछे का हिस्सा जलकर खाक हो गया है।

सिगरेट या माचिस जलाने की वजह से आग की आशंका

आग इतनी भीषण थी कि इसका धुआं लोहे के पुल से लेकर पटपड़गंज, मयूर विहार, न्यू अशोक नगर और नोएडा बॉर्डर तक पहुंच रहा था। असिता ईस्ट में रहने वाले पक्षियों को भी इससे दिक्कत हो रही थी। अधिकारियों ने आशंका जताई है कि कुछ असामाजिक तत्व झाड़ियों में छिपकर नशापान करते हैं। सिगरेट या माचिस जलाने की वजह से हरित क्षेत्र में आग लग जाती है।

पानी की किल्लत, प्यासो को जिल्लत, टैंकर माफियाओं की चांदी, डीजेबी को घाटा, कोर्ट का तमाचा

परिवहन विशेष न्यूज

एसडी सेठी। राजधानी दिल्ली में कतरा-कतरा पानी के लिए मारामारी जारी है। दिल्ली सरकार का रोना है कि हरियाणा सरकार ने दिल्ली के पानी पर ब्रेक लगाया हुआ है।जिसकी वजह से दिल्ली में पानी की किल्लत पैदा हो गई है।उधर राजधानी के लोग प्यास की जिल्लत झेलने को मजबूर है। वहीं एक निजी टीवी चैनल के स्टिंग आप्रेशन में पानी के टैंकर माफियाओ की कलाई खोल कर रख दी है। स्टिंग के दौरान पानी के टैंकर कॉलोनी में पानी आपूर्ति के लिए भेजे तो जाते हैं। लेकिन प्यासों तक पानी पहुंचने की बजाए 3000 रूपये प्रति टैंकर के मार्किट में ब्लैक किया जा रहा है। जबकि आम आदमी को मकान बनाने, गाडी को धोने तक के लिए पानी के इस्तेमाल की पाबंदी लगा रखी है।

वहीं टैंकर माफिया पानी को खुलेआम ब्लैक कर रहे है। इन सब चोर बाजारी के लिए बीजेपी दिल्ली प्रदेशाध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा ने आरोप लगाया है कि पानी की कालाबाजारी बाकायदा दिल्ली की सरकार के संरक्षण में चोरी हो रही है।उन्होने जल संकट के लिए दिल्ली जल बोर्ड, उसके अधिकारी, चेयरमैन और केजरीवाल सरकार को.जिम्मेदार बताया है। सचदेवा ने कहा कि जो जल बोर्ड कभी मुनाफे में होता था वो आज 80 हजार करोड रूपये के घाटे में क्यो जूझ रहा है ?इसके लिए उन्होंने मिस मैनेजमेंट को जिम्मेदार बताया है। सचदेवा ने कहा कि इनका मकसद सिर्फ-और -सिर्फ दिल्ली को कैसे लूटा जाए ?और अपनी जेबें भरी जाए।वीरेंद्र सचदेवा ने कहा कि पिछले 8-10 सालों में पाईप लाईन की रिपेयरिंग नहीं कर पाए। जलबोर्ड लीकेज नही रोक पाया।पानी की बर्बादी रोकने इनके बूते से बहार है। उन्होने बाकायदा दावा किया कि अगर मैं गलत कह रहा हूं तो हम पर मुकदमा कर दें। इस वक्त दिल्ली शहर ,गांवों, कालोनियों और स्लम इलाके, झुग्गी झोपड़ियों में गंदा व बदबूदार पानी पीने को मजबूर है। उन्होंने दिल्ली वालों से भी अपील करते हुए कहा कि आपके घर में पानी आ रहा है उसे कम से कम उबाल कर पियें। उन्होने कहा कि वह दिल्ली सरकार के भरोसे मत रहे ।दिल्ली सरकार का दायित्व था घर में पानी मुहैया कराना ।लेकिन इन्होने इसे लूट का साधन बना दिया। उल्लेखनीय है कि निजी चैनल आजतक पर आप्रेशन टैंकर का बडा असर हुआ है ।इस पर सुप्रीमकोर्ट ने दिल्ली सराकार से पूछा है कि टैंकर माफिया पर आपने क्या एक्शन लिया है ? हालांकि शीर्ष अदालत ने दिल्ली सरकार की सुनवाई पर हरियाणा को बचे हुए पानी को छोडने के संबंध में निर्देश दे दिये है। लेकिन टैंकर माफियाओ पर भी सरकार से जवाब मांगकर कटघरे में खडा कर दिया है। जस्टिस प्रशांत कुमार मिश्रा और पीबी वाले की पीठ ने पूछा कि दिल्ली में टैंकर माफिया सक्रिय है और आप कोई कार्रवाई क्यों नहीं कर रहे है ?अदालत ने यहां तक कह डाला कि अगर दिल्ली सरकार कोई कारवाई नहीं कर सकती है ,तो दिल्ली पुलिस को निर्देश दे सकते हैं। दरअसल पानी टैंकर माफिया बिना किसी डर के पानी को बेचने का गौरखधंधा कर रहा है। इस पर दिल्ली सरकार की तरफ से पेश हुए अधिवक्ता अभिषेक मनु सिंघवी ने कोर्ट से कहा कि हम समाधान खोजने के लिए यहां आए हैं। कोर्ट ने तल्ख होते हुए कहा कि अगर पानी हिमाचल से आ रहा है तो दिल्ली में पानी कहां जा रहा है ? क्या दिल्ली सरकार ने 2023 में पानी की बर्बादी से बचने को रोकने के लिए क्या कदम उठाए है ? क्या किसी टैंकर माफिया के खिलाफ एफआईआर दर्ज कराई है ? एफआईआर दर्ज कराई है तो बताइए। उधर टैंकर माफियाओ के खिलाफ एक्शन लेने के लिए जल मंत्री ने कहा कि वह एक्शन लेंगे। इस मामले में सुप्रीमकोर्ट में गुरूवार को भी सुनवाई जारी है। सारा लब्बोलुआब टैंकर माफिया पानी की कालाबाजारी में 3000 रूपये में टैंकर बेच रहे हैं।स्टिंग में टैंकर वाला साफ कह रहा है पानी की कोई किल्लत नहीं है। आप एड्रेस बताओ टैंकर वहीं पहुंच जाएगा। कंस्ट्रक्शन के लिए 2100 रूपये में टैंकर बेचा जा रहा है।जिसमें 12000 लीटर पानी आता है। अगर टैंकर का पानी छत पर रखी टंकी तक पहुंचाना है तो इसका रेट 3000 रूपये तक वसूले जा रहे हैं। वहीं बोरवेल के पानी की कीमत 2200 रूपये प्रति टैंकर बेचा जा रहा है।

विश्व खाद्य सुरक्षा दिवस विशेष : बुफे सिस्टम की प्रथा बंद होनी चाहिए, इससे अनाज का नुकसान कम होंगा : डॉ उमेश शर्मा

संयुक्त राष्ट्र संघ ने दुनिया में सबके लिए खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने, इसके महत्व को समझने और खाद्य सुरक्षा के लिए बढ़ते खतरे के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए वर्ल्ड फूड सेफ्टी डे बनाया जाता हैं। वर्ल्ड फूड सेफ्टी डे पर लोगों को खराब हो गए भोजन के खतरों और उसे खाने से होने वाली बीमारियों के प्रति भी सचेत किया जाता है।

इस अवसर पर वरिष्ठ समाजसेवी डॉ उमेश शर्मा ने कहा कि ऐसी बात बिलकुल भी नहीं है कि सभी लोग इन बातों को जानते नहीं हैं, बल्कि हर कोई इस बात को बहुत अच्छी तरह से जानता है कि एक बेटी की शादी में परिवार कर्ज में डूब जाता है। इसलिए खाना पेट भरकर खाइए लेकिन जितनी ज़रुरत हो उतना ही लीजिए लेकिन उतना मत लीजिए कि सारा खाना कूड़ेदान या नाली में चला जाए। अगर हो सके तो अन्न का आदर कीजिए और सोचिये इससे कितने गरीबो का पेट भर सकता हैं। भारत में हर वर्ष जितना भोजन तैयार होता है उसका एक तिहाई बर्बाद चला जाता है। विश्व खाद्य संगठन के अनुसार देश में हर साल पचास हजार करोड़ रूपये का भोजन बर्बाद चला जाता है। एक ऑकलन के मुताबिक बर्बाद होने वाले भोजन की धनराशि से पांच करोड़ बच्चों की जिदगी संवारीं जा सकती है। हमारी लापरवाही के कारण पैदा किए जाने वाले अनाज का एक तिहाई हिस्सा बर्बाद कर दिया जाता है। बर्बाद जाने वाला भोजन इतना होता है कि उससे करोड़ो लोगों की खाने की जरूरत पूरी हो सकती है। इस गंभीर विषय पर सामाजिक जागरूकता बढनी चाहिए। इसलिए भोजन बर्बाद नहीं करना चाहिए। काश के ये बात सभी समझ ले तो कितनी खाने की बर्बादी रुक जाएगी। इसलिए बुफे सिस्टम की प्रथा बंद होनी चाहिए, इससे अनाज का नुकसान कम होंगा। जब तक समाज मे बुफे सिस्टम आम रहेगा, तब तक खाने की बरबादी को रोकना मुश्किल काम है। हमारे समाज मे मेहमान नवाज़ी को जो पहले तरिका था उसी को आम करने की ज़रूरत है। बुफे सिस्टम ने हमारे समाज मे एक दूसरे की पार्टियों मे मदद करने का जो जज्बा लोगो मे था, उसे खत्म कर दिया हैं। यह चलन सही नही है। इसको बदलने की शुरुआत अपने घर से करे लेकिन जब कोई इन्सान या परिवार किसी दूसरे की शादी में जाते है। वे भी खाना वेस्ट करते हैं, तब उनको याद नहीं रहता है कि हमारी शादी में खाना वेस्ट हुआ। इसलिए सभी सज्जनों से हाथ जोड़कर विनती है कि ऐसा ना करें। शादी में खाना वेस्ट ना करें। आप सभी से अनुरोध है कि अपने बच्चों, बीबी को समझाएं कि खाना वेस्ट ना करें। शादी लड़के की हो या लड़की की कहीं पर भी अनाज की बर्बादी मत करो क्योकि हम सब दो वक्त के खाने के लिए ही मेहनत करते हैं। इसलिए समाज के सभी लोगों को मिलकर भोजन की बर्बादी रोकने के लिये सामाजिक चेतना लानी चाहिए। हमें अपने घर परिवार के बच्चों में बचपन से यह आदत डालनी होगी कि जितनी भूख हो उतना ही खाना लें। भोजन की बर्बादी रोकने के लिए हमें अपनी आदतों को सुधारने की जरूरत हैं। तभी भोजन की बर्बादी रोकी जा सकती हैं। लेकिन जब से ये बुफे सिस्टम सिस्टम चला है, इसकी वज़ह से लोग कुछ ज़्यादा ही खाने को खराब करतें। लोग पहले पंगत में बैठकर खाना खिलते थे और साथ घरवालों से मिलने का मौका मिलता था फिर टेबल मेज़ भी ठीक था तो खाना नही खराब होता था लेकिन बफर में ज़्यादा खाना बर्बाद होता हैं।

श्री शर्मा ने आगे कहा कि बुफे सिस्टम की प्रथा बंद होनी चाहिए, इससे अनाज का नुकसान कम होंगा। कृपया भोजन का अनादर न करें भोजन अपने थाली में उतना ही लें जितना खा सकें। भोजन बर्बाद ना करें, पाश्चात्य संस्कृति से बचें और अपनी संस्कृति पर गर्व करें। हिंदू समाज में तो पहले पंगत में बैठकर खाना खाते थे, पर पश्चिम की सभ्यता ने खड़े होकर भोजन करने की आदत और खाने की कद्र नहीं करना सीखा दिया है। इसलिए हमारे सभ्यता संस्कृति में बैठकर भोजन कराया जाता है और बार बार मनभर भोजन जिमाया जाता है। लेकिन आजकल की पार्टी, कार्यक्रम और सादियों में देखा जाता हैं कि कुछ लोग भोजन की वेल्यु नहीं करते और वो ही चीज खुद के पैसे से खरीदते हैं तो बहुत सोचते हैं। लोग जब लेते है तो उसमे भी अपना फायदा सोचते हैं। लेकिन जब से ये सेल्फ सर्विस का रिवाज हूवा है, तबसे 10 तरह का भोजन बिगड़ने में जाता है। क्योकि आजकल लोग अपनी सुविधा के अनुसार बुफे सिस्टम रखते हैं, जिसमें काफी खाना खराब होता हैं, अधिकतम भाग कूड़ेदान में फेंक दिया जाता है, अक्सर सादी और पार्टियों में कुछ गैरजिम्मेदार और लापरवाह लोग बहुत बुरी तरह कीमती खाना बर्बाद करते है। ऐसा संस्कारहीन ही करते है, वरना सनातन संस्कारों में भोजन का एक कण भी पात्र में छोडना महा पाप होता है और ये बहुत ही ज़्यादा ग़लत और दुःख एवं विचारणीय प्रश्न है। वहीं, हमलोग जब 20 रुपये के गोलगप्पे खाने खरीद कर खाते हैं तो तीन बार पानी लेते है, फिर पापड़ी मांगते हैं और 20 रूपये वाली आइस क्रीम के कप का ढक्कन भी चाट जाते हैं, लेकिन किसी की बेटी या बेटे की शादी, पार्टी या कार्यक्रम में इतना खाना बर्बाद क्यों करते हैं ? जरा सोचिये इससे कितने गरीबो का पेट भर सकता हैं। जब से हमलोगो ने पाश्चात्य संस्कृति को अपनाया है, तब से अन्न की ज़्यादा बरबादी होती आ रही है और आगे भी होगी। ऐसा कर हम मां अन्नपूर्णा देवी का भी अपमान कर रहे है। पहले अल्पाहार, स्वरूचि भोज और बिठाकर भोजना इच्छाअनुसार पूछ - पूछ कर परोसा जाता था, तब अन्न की बरबादी नही होती थी। लेकिन इस महंगाई के दौर में ज़रूरत से बेहद ज़्यादा भोजन बर्बाद करना हमारे समाज का बेहद घिनौना और शर्मनाक कार्य हैं। इसकी जितनी भी आलोचना की जाए कम होगा। इसलिए हम हम तो आज से और अभी से शपथ लेते है कि किसी की भी बेटी या बेटे की शादी या किसी भी कार्यक्रम में मे भोजन बर्बाद नहीं करेंगे और अपनी छमता से बढकर सहयोग करेंगे। अगर बात सही लगे तो आप भी शुरुआत करने के लिए हाथ जोडकर निवेदन करता हूँ। राष्ट्रहित में हमारी सभी से अपील हैं कि समाज के सभी लोगों को मिलकर भोजन की बर्बादी रोकने के लिये सामाजिक चेतना लानी चाहिए। तभी भोजन की बर्बादी रोकने का अभियान सफल हो पायेगा।

जापान से खून मंगाकर बचाई नवजात की जान, 8वीं बार गर्भधारण के बाद पहली बार महिला बनी मां

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स AAIMS) में भर्ती प्रसूता के बच्चे को बचाने के लिए छह हजार किलोमीटर दूर जापान की राजधानी टोक्यो से खून मंगाया गया। इसकी बदौलत प्रसूता सात प्रयास असफल होने के बाद आठवें प्रयास में स्वस्थ बच्चे की मां बन सकी हैं। बच्चे को बचाने के लिए विशेष तरह के खून ओ-डी फेनोटाइप की जरूरत थी।

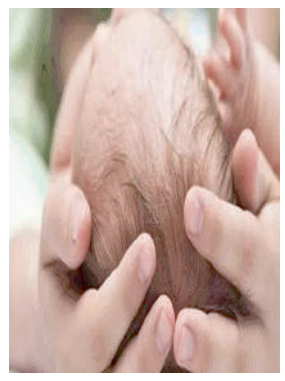

नई दिल्ली। अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स, AAIMS) में भर्ती प्रसूता के बच्चे को बचाने के लिए छह हजार किलोमीटर दूर जापान की राजधानी टोक्यो से खून मंगाया गया। इसकी बदौलत प्रसूता सात प्रयास असफल होने के बाद आठवें प्रयास में स्वस्थ बच्चे की मां बन सकी हैं।

बच्चे को बचाने के लिए विशेष तरह के खून ओ-डी फेनोटाइप की जरूरत थी। जिसकी भारत में उपलब्धता नहीं हो पा रही थी। गर्भवती को बचाने के लिए एम्स के प्रसूता रोग विभाग के डॉक्टर्स ने जापान की रेड क्रॉस सोसाइटी और ब्रिटेन के अंतरराष्ट्रीय ब्लड समूह रेफरेंस लैब के साथ मिलकर यह कार्य सफल किया है।

सात बार गर्भ विकसित नहीं हुए, या बच्चे नहीं बचे

एम्स के प्रसूता रोग विभाग की डॉ. नीना मल्होत्रा, डॉ. अपर्णा शर्मा और डॉ. वत्सला दढ़वाल की देखरेख में प्रसूता का उपचार हुआ है। डॉ. अपर्णा शर्मा ने बताया कि हरियाणा की रहने वाली एक महिला को आठवीं बार गर्भ धारण हुआ था। इससे पहले सात सात गर्भ विकसित नहीं हो सके थे या बच्चे जन्म के बाद नहीं बच सके थे।

हिमोलेटिक रोग से भ्रूण था पीड़ित

महिला हरियाणा के एक अस्पताल में उपचार करा रही थी। डॉक्टर्स ने पाया कि महिला के गर्भ में पल रहा भ्रूण हिमोलेटिक रोग से पीड़ित था। इसमें मां का खून और उसके भ्रूण का खून मिलता नहीं है। ऐसे में गर्भ में पल रहे बच्चे में खून की कमी हो रही थी। मां के हीमोग्लोबिन का स्तर लगातार गिर रहा था। बाद में महिला को एम्स दिल्ली रेफर कर दिया गया।

गर्भ में ही चढ़ाना था खून

यहां डॉक्टर्स की टीम ने महिला का उपचार शुरू किया। महिला के भ्रूण की लाल रक्त कोशिकाओं को बचाने के लिए गर्भ में ही खून चढ़ाने की तुरंत आवश्यकता थी। लेकिन, समस्या यह थी कि उससे कोई भी ब्लड ग्रुप मिल नहीं रहा था।

इसके बाद उसका सैंपल लेकर ब्रिटेन के अंतरराष्ट्रीय ब्लड ग्रुप रेफरेंस लैब भेजा गया। जांच के बाद उन्होंने पाया कि यह बेहद दुर्लभ रक्त समूह ओ-डी फेनोटाइप है। बच्चे को बचाने के लिए ब्लड चढ़ाने की जरूरत थी। हालांकि, इस दुर्लभ रक्त की उपलब्धता काफी कम है।

यह भ्रूण को जिंदा रखने का लिए गर्भावस्था में कई बार अलग-अलग समय पर चढ़ाया जाता है। इसके लिए एम्स दिल्ली ने देशभर के अस्पतालों और ब्लड बैंकों से संपर्क किया, लेकिन सफलता नहीं मिली।

खुशखबरी! इस तारीख तक अब तैयार हो जाएगा मेडिकल कॉलेज और अस्पताल, पढ़ें

परिवहन विशेष न्यूज

गुरुग्राम जिले में बन रहे श्री शीतला माता देवी मेडिकल कॉलेज और अस्पताल मार्च 2025 तक बनकर तैयार हो जाएगा। अस्पताल का करीब 48 फीसदी काम पूरा हो चुका है। बाकी कामों में रफ्तार बढ़ाई जा रही है। इसका निर्माण कार्य एक अप्रैल 2022 को शुरू किया गया था। जबकि 31 जुलाई 2024 पूरा करने का लक्ष्य रखा गया था। जानें अस्पताल में क्या-क्या होंगी सुविधाएं।

गुरुग्राम। शहर में श्री शीतला माता देवी मेडिकल कालेज और अस्पताल मार्च 2025 में बनकर तैयार हो जाएगा। शहर के खेड़की माजरा सेक्टर 102 में निर्माणाधीन मेडिकल कालेज और अस्पताल का 47.50 प्रतिशत कार्य पूरा हो चुका है। अकेडमिक ब्लॉक, टीचिंग अस्पताल और ट्रामा सेंटर का स्ट्रक्चर बनकर तैयार हो चुका है।

प्रोजेक्ट के बाकी हिस्से का भी निर्माण कार्य तेजी से चल रहा है। इस बिल्डिंग का निर्माण कार्य एक अप्रैल 2022 को शुरू किया गया था और 31 जुलाई 2024 पूरा करने का लक्ष्य रखा गया था। तय समय में काम पूरा नहीं होने पर अब अंतिम डेडलाइन 31 मार्च 2025 निर्धारित की गई है। 29 जून 2017 को तत्कालीन मुख्यमंत्री ने गुरुग्राम में मेडिकल कोलज और अस्पताल के निर्माण की घोषणा की थी।

जीएमडीए के अधिकारियों का दावा है कि बिल्डिंग निर्माण सहित अन्य कार्य पूरा होते ही इसे शुरू कर दिया जाएगा। मेडिकल कालेज और अस्पताल बनने से गुरुग्राम सहित पूरे दक्षिण हरियाणा के जिलों के लोगों को भी इसका लाभ मिलेगा।

बता दें कि गुरुग्राम शहर में फिलहाल एक जिला नागरिक अस्पताल है। लेकिन इसमें भी चिकित्सा सुविधाएं न के बराबर है और मजबूरन लोगों को बड़े प्राइवेट अस्पतालों में जाना पड़ रहा है। शहर की 30 लाख आबादी पर एक सरकारी अस्पताल है।

मेडिकल कॉलेज और अस्पताल में यह सुविधाएं होगी

ट्रामा सेंटर
टीचिंग ब्लॉक
अस्पताल
गर्ल्स हॉस्टल
ऑटोप्सी
रेजिडेंट हॉस्टल
अकादमिक ब्लॉक
नर्स हॉस्टल
शॉपिंग कांप्लेक्स
यूजी ब्वॉयज हास्टल

कॉलेज में होगी 150 सीट

मेडिकल कॉलेज की शुरुआत 150 सीटों से होगी, जिसे कुल 250 सीटी तक बढ़ाया जा सकेगा। सेक्टर 102 में निर्माण स्थल पर मेडिकल सुविधाओं के साथ पहले चरण में ओपीडी ब्लॉक का निर्माण कार्य शुरू किया था।

प्रोजेक्ट की खास बातें

12 जनवरी 2022 को वर्क अलॉट किया गया था।

1 अप्रैल 2022 को निर्माण कार्य शुरू हुआ था।

31 जुलाई 2024 तक काम पूरा किया जाना था।

31 अक्टूबर 2024 इसकी संशोधित डेडलाइन (निर्माण कार्य पूरा करने की) निर्धारित की गई।

31 मार्च 2025 का लक्ष्य अब बिल्डिंग निर्माण पूरा करने का रखा गया है।

31 मई 2024 तक 248.25 करोड़ रुपये निर्माण पर खर्च हो चुके हैं।

541.82 करोड़ रुपये प्रोजेक्ट की कुल लागत है।

30.08 एकड़ का है प्रोजेक्ट

इस प्रोजेक्ट में एक मेडिकल कालेज, एक 883 बेड वाला अस्पताल और एक अकादमिक ब्लाक के साथ-साथ छात्रावास और घरों के रूप में आवासीय सुविधाएं शामिल हैं। तकनीकी रूप से परिसर और इसकी इमारतों को सूचना प्रौद्योगिकी, अस्पताल प्रबंधन और भवन प्रबंधन प्रणाली, सीसीटीवी और सुरक्षा की नवीनतम सुविधाओं के साथ-साथ डिजाइन और निर्माण में अन्य सुविधाओं के साथ योजना तैयार की गई है।

मेडिकल कॉलेज और अस्पताल की बिल्डिंग का निर्माण कार्य तेजी से चल रहा है और मार्च 2025 तक पूरा करने का लक्ष्य रखा गया है।

विकास मलिक, एक्सईएन जीएमडीए

अलग-अलग मामलों में लाखों के जेवर और नकदी चोरी, पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर शुरू की जांच

गाजियाबाद जिले से एक के बाद एक कई मामले सामने आए हैं। यहां पर पहले केस की अगर बात करें तो नगर निगम के ठेकेदार के घर से लाखों के जेवर और नकदी चोरी की गई। दूसरे मामले में एक ही मकान में छह मोबाइल चोरी की घटना को अंजाम दिया गया। अन्य एक मामले में एसी के पाइप तोड़ने वाले आरोपित को पुलिस ने पकड़ा।

गाजियाबाद। पटेल मार्ग में एक बंद घर को निशाना बनाते हुए लगभग 20 लाख के जेवर और सवा तीन लाख रुपये की नकदी चोरी कर लिए गए। इस मामले में सिहानी गेट थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई गई है। शिकायतकर्ता साराश तायल ने बताया कि वह नगर निगम में ठेकेदारी करते हैं। 10 जून को सुबह साढ़े दस बजे वह अपने पिता सतीश कुमार को उपचार के लिए पारस अस्पताल लेकर गए थे। परिवार के अन्य सदस्य भी दोपहर एक बजे घर से चले गए। शाम को पांच बजे वापस आए तो अलमारी को ताला टूटा हुआ देखा, जिसके अंदर से 20 लाख के जेवर और सवा - तीन लाख की नकदी चोरी कर लिया गया था। दो कैमरे भी तोड़ दिए गए। उन्होंने बताया कि चोरी की रिपोर्ट दर्ज कराने के साथ ही उन्होंने पुलिस को इस मामले में सीसीटीवी कैमरे की फुटेज भी सौंपी है, लेकिन पुलिस वारदात का पर्दाफाश करने के लिए पुलिस गंभीरता से प्रयास नहीं कर रही है, उल्टा उनसे ही कह रही है कि और कहीं पर भी सीसीटीवी कैमरों में आरोपितों की तस्वीर कैद हुई है तो उसे लेकर आएं। जबकि यह कार्य पुलिस को करना है। गाजियाबाद के राजनगर एक्सटेंशन में बंद फ्लैट को निशाना बनाकर जेवर और नकदी चोरी कर ली गई। इस मामले में नंदग्राम थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई गई है।

'सलमान' और 'शाहरुख' का लिया किराया, पर रोडवेज बस में नहीं दिया टिकट

परिवहन विशेष न्यूज

रोडवेज बस के कंडक्टर ने बुधवार को मैनपुरी से कौशांबी को जा रही बस में सवार जुनैद नाम के व्यक्ति से उसके दो बकरों का जिनका नाम सलमान और शाहरुख है। उनका किराया तो लिया लेकिन उन्हें टिकट नहीं दिया। जब उसने टिकट लेने की जिद्द की तो उसे बस से उतार देने की धमकी दी गई। बाद में उसने इस बात की शिकायत कई अधिकारी और कर्मचारी से की।

साहिबाबाद। रोडवेज बस के परिचालक ने बुधवार को मैनपुरी से कौशांबी बस डिपो तक का सलमान व शाहरुख नामक दो बकरों का उनके मालिक जुनैद से 900 रुपये किराया वसूला, पर उसका टिकट नहीं दिया। विरोध पर बस से नीचे उतार दिया।

कंडक्टर ने दोनों बकरों के टिकट के लिए पैसे

काफी मिन्नत के बाद बेटिकट यात्रा पूरी कराई। कौशांबी डिपो पहुंचने पर पीड़ित जुनैद ने रोडवेज अधिकारियों से शिकायत की। जुनैद ने बताया कि बुधवार सुबह करीब छह बजे मैनपुरी से रोडवेज बस में दोनों बकरों संग कौशांबी डिपो के लिए बैठे थे। परिचालक ने दोनों बकरों के एक-एक टिकट के पैसे मांगे।

बार-बार कहने पर भी परिचालक ने नहीं दिया टिकट

इस पर जुनैद ने 450 रुपये अपने व दोनों बकरों के टिकट के लिए 450-450 यानी 900 रुपये दिए। परिचालक ने सिर्फ उनका टिकट दिया, जबकि बकरों का टिकट न देकर बेटिकट यात्रा कराने को कहा। उन्होंने टिकट जांच के दौरान पकड़े जाने की बात कही। इस पर परिचालक ने खुद की जिम्मेदारी ली। बार-बार कहने पर भी टिकट देने से मना कर दिया।

जुनैद ने बताया कि इन बकरों को मैनपुरी में पाल रखा था। 17 जून को बकरीद है। ईद पर कुर्बानी के लिए बकरों को अपने रिश्तेदारों के यहां सीमांत विहार देने जा रहे हैं। वहीं, रोडवेज अधिकारियों ने बताया कि यात्री की तरह ही बकरे का भी किराया लिया जाता है, लेकिन टिकट न देना अपराध की श्रेणी में है। नियमानुसार कार्रवाई होगी।

शिकायत पर भी सुनवाई नहीं

जुनैद ने बताया कि वह दोपहर में करीब दो बजे कौशांबी बस अड्डे पर पहुंचे थे। यहां रोडवेज के कई अधिकारी व कर्मचारी मौजूद थे। जब उनसे शिकायत की तो उन्होंने भी सुनवाई नहीं की। केवल बाद में कार्रवाई करने का आश्वासन दिया। न कोई शिकायत मांगी व न ही बस की जानकारी ली। जुनैद का कहना है कि अगर रुपये लिए थे तो टिकट भी देना चाहिए था।

टिकट न देने की शिकायत मिलने पर संबंधित परिचालक पर कड़ी कार्रवाई होगी। यह भी देखा जाएगा कि बस किस डिपो की है। अगर दूसरे डिपो की बस होगी तो संबंधित अधिकारी को भी अवगत कराया जाएगा। -*शिव बालक, सहायक क्षेत्रीय प्रबंधक, कौशांबी*

भाजपा के प्रदेश मंत्री बसंत त्यागी को फिर मिली फोन पर धमकी, मुकदमा दर्ज

भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के प्रदेश मंत्री बसंत कुमार त्यागी को एक बार फिर से फोन पर जान से मारने की धमकी मिली है। उन्होंने ट्रानिका सिटी थाने में मोबाइल नंबर के आधार पर मुकदमा दर्ज कराया है। इसके पहले उन्हें फरवरी में फोन पर जान से मारने की धमकी मिली थी। बसंत त्यागी नानू गांव में परिवार के साथ रहते हैं। उनकी पत्नी ममता त्यागी जिला पंचायत अध्यक्ष हैं।

गाजियाबाद। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा, BJP) के प्रदेश मंत्री बसंत कुमार त्यागी को एक बार फिर से फोन पर जान से मारने की धमकी मिली है। उन्होंने ट्रानिका सिटी थाने में मोबाइल नंबर के आधार पर मुकदमा दर्ज कराया है। इसके पहले उन्हें फरवरी में फोन पर जान से मारने की धमकी मिली थी।

बसंत त्यागी नानू गांव में परिवार के साथ रहते हैं। उनकी पत्नी ममता त्यागी जिला पंचायत अध्यक्ष हैं। उनका आरोप है कि सोमवार को उन्हें वॉट्सऐप पर धमकी भरे कॉल आए। इसके पहले 22 फरवरी को भी धमकी भरे कॉल आए थे। उस समय भी उन्होंने ट्रानिक सिटी थाने में मुकदमा दर्ज कराया था। अब भी मुकदमा दर्ज कराया है। सहायक पुलिस आयुक्त लोनी सूर्य बली मौर्य ने बताया कि मामले की जांच की जा रही है। साइबर सेल की भी मदद ली जा रही है।

पूर्व में बसंत त्यागी को मिली धमकी के मामले में पुलिस के हाथ खाली हैं। तीन माह बाद भी पुलिस धमकी देने वाले के बारे में कुछ भी पता नहीं लगा सकी है। अब नया मामला आ गया है। इससे पुलिस के लिए चुनौती बढ़ गई है। पुलिस का कहना है कि धमकी भरे काल 92 अंक से शुरू होने वाले नंबर से आ रहे हैं। वह ट्रेस नहीं हो रहा है। इससे दिक्कत हो रही है।

संसद में दागी नेताओं की संख्या बढ़ना चिन्ताजनक

ललित गर्ग

आज भारत की आजादी के अमृतकाल का एक बड़ा प्रश्न है भारत की राजनीति को अपराध मुक्त बनाने का। यह बेवजह नहीं है कि देशभर में अपराधी तत्त्वों के राजनीति में बढ़ते दखल ने ऐसी समस्या खड़ी कर दी है कि अपहरण के आरोपी अदालत में पेश होने की जगह मंत्री पद की शपथ लेने पहुंच जाते हैं।

देश में 18वीं लोकसभा चुनी जा चुकी है, मंत्रिमंडल का गठन हो चुका है। दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र और रिकॉर्ड संख्या में मतदाता होने के गर्व करने वाली स्थितियां हैं वहीं चिन्ताजनक, विचलित एवं परेशान करने वाली स्थितियां भी हैं। खबर आई है कि लोकतंत्र के सबसे बड़े मंदिर में पहुंचने वाले 543 सांसदों में 46 फीसदी आपराधिक रिकॉर्ड रखते हैं जो पिछली बार से तीन प्रतिशत अधिक है। भारतीय राजनीति में आपराधिक छवि वाले या किसी अपराध के आरोपों का सामना कर रहे लोगों को जनप्रतिनिधि बनाए जाने एवं उन्हें राष्ट्र-निर्माण की जिम्मेदारी दिया जाना-हर नागरिक के माथे पर चिंता की लकीर लाने वाली है। क्या इस स्थिति में देश की लोकतांत्रिक शुचिता एवं पवित्रता की रक्षा हो पाएगी? क्या हम आदर्श एवं मूल्यपरक समाज बना पाएंगे? क्या ये दागदार नेता एवं जन-प्रतिनिधि कालांतर हमारी व्यवस्था को प्रभावित नहीं करेंगे? चुनाव प्रक्रिया से जुड़े मसलों का विश्लेषण करने वाली सचेतक संस्था एसोसिएशन ऑफ डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स की ताजा रिपोर्ट बताती है कि वर्ष 2019 में चुने गये सांसदों में जहां 233 यानी 43 फीसदी ने अपने विरुद्ध आपराधिक मामले दर्ज होने की बात स्वीकार की थी, वहीं अठाहरवीं लोकसभा के लिये चुने गए 251 सांसदों ने आपराधिक मामले दर्ज होने की बात मानी है। जो कुल संख्या का 46 फीसदी बैठती है।

आज भारत की आजादी के अमृतकाल का एक बड़ा प्रश्न है भारत की राजनीति को अपराध मुक्त बनाने का। यह बेवजह नहीं है कि देशभर में अपराधी तत्त्वों के राजनीति में बढ़ते दखल ने एक ऐसी समस्या खड़ी कर दी है कि अपहरण के आरोपी अदालत में पेश होने की जगह मंत्री पद की शपथ लेने पहुंच जाते हैं। अरविन्द केजरीवाल जैसे नेता आम चुनाव में कहते हैं कि आप लोग बड़ी संख्या में आम आदमी पार्टी को वोट दें ताकि मैं जेल जाने से बच जाऊं। हम ऐसे चरित्रहीन एवं अपराधी तत्वों को जिम्मेदारी के पद देकर कैसे सुशासन एवं ईमानदार व्यवस्था स्थापित करेंगे? कैसे आम जनता के विश्वास पर खरे उतरेंगे? कैसे संसद में दागियों के पहुंचने के लिये द्वार बंद होंगे? दरअसल, सुप्रीम कोर्ट की सजग पहल पर ही वर्ष 2020 से सभी राजनीतिक दल लोकसभा व विधानसभा के उम्मीदवारों के आपराधिक रिकॉर्ड को प्रकाशित करने लगे है। निश्चित ही इस आदेश का मकसद देश की राजनीति को आपराधिक छवि वाले नेताओं से मुक्त करना ही था। लेकिन वास्तव में ऐसा हुआ नहीं क्योंकि तमाम राजनीतिक दलों की प्राथमिकता जीतने वाले उम्मीदवार थे, अब चाहे उनका आपराधिक रिकॉर्ड ही क्यों न हो।

बड़ा प्रश्न है कि आखिर राजनीति में तब कौन आदर्श उपस्थित करेगा? क्या हो गया उन लोगों को जिन्होंने सदैव ही हर कुर्बानी करके आदर्श उपस्थित

किया। लाखों के लिए अनुकरणीय बने, आदर्श बने। चाहे आज़ादी की लड़ाई हो, देश की सुरक्षा हो, धर्म की सुरक्षा हो, अपने वचन की रक्षा हो अथवा अपनी संस्कृति और अस्मिता की सुरक्षा का प्रश्न हो, उन्होंने फर्ज़ और वचन निभाने के लिए अपना सब कुछ होम दिया था। महाराणा प्रताप, भगत सिंह, दुर्गादास, छत्रसाल, शिवाजी जैसे वीरों ने अपनी तथा अपने परिवार की सुख-सुविधा को गौण कर बड़ी कुर्बानी दी थी। गुरु गोविन्दसिंह ने अपने दोनों पुत्रों को दीवार में चिनवा दिया और पन्नाधाय ने अपनी स्वामी भक्ति के लिए अपने पुत्र को कुर्बान कर दिया। ऐसे लोगों का तो मन्दिर बनना चाहिए। इनके मन्दिर नहीं बने, पर लोगों के सिर श्रद्धा से झुकते हैं, इनका नाम आते ही। लेकिन आज जिस तरह से हमारा राष्ट्रीय जीवन और सोच विकृत हुए हैं, हमारी राजनीति स्वार्थी एवं संकीर्ण बनी है, हमारा व्यवहार झूठा हुआ है, चेहरों से ज्यादा नकाबें ओढ़ रखी हैं, उसने हमारे सभी मूल्यों को धराशायी कर दिया। राष्ट्र के करोड़ों निवासी देश के भविष्य को लेकर चिन्ता और ऊहापोह में हैं। वक्त आ गया है जब देश की संस्कृति, गौरवशाली विरासत को सुरक्षित रखने के लिए कुछ शिखर के व्यक्तियों को भागीरथी प्रयास करना होगा। दिशाशून्य हुए नेतृत्व वर्ग के सामने नया मापदण्ड रखना होगा। अगर किसी हत्या, अपहरण या अन्य संगीन अपराधों में कोई व्यक्ति आरोपी है तो उसे राजनीतिक बता कर संरक्षण देने की कोशिश या राजनीतिक लाभ उठाने की कुचेष्टा पर विराम लगाना ही होगा। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भ्रष्टाचार एवं अपराध मुक्त राजनीति को सदैव प्राथमिकता दी लेकिन चुनाव जीतने के रण में वे भी अपराधी राजनेताओं को प्रश्रय देते हुए दिखे हैं।

सभी राजनीतिक दलों ने ही दागी उम्मीदवारों को टिकट दिए हैं। जो राजनीतिक दलों की कथनी और करनी के भारी अंतर को ही उजागर करता है। सवाल है कि देश के लिये नीति निर्धारण करने वाले ऐसे दागी लोग हमारे भाग्यविधाता बने रहेंगे तो हमारा भविष्य कैसा होगा? क्या आपराधिक पृष्ठभूमि वाले लोग जनप्रतिनिधि चुने जाने के बाद हमारी कानून-व्यवस्था को प्रभावित नहीं करेंगे? क्या होगा हमारे समाज व व्यवस्था का भविष्य? क्यों तमाम आदर्शों की बात करने वाले और दूसरे दलों के नेताओं की कारगुजारियों पर सवाल उठाने वाले नेता राजनीति को अपराधियों के वर्चस्व से मुक्त कराने की ईमानदार पहल नहीं करते? क्यों सभी राजनीतिक दल भारतीय लोकतंत्र में शुचिता एवं पवित्रता के लिये सहमति नहीं बनाते? निश्चित रूप से यदि समय रहते इस दिशा में कोई गंभीर पहल नहीं होती तो आने वाले वर्षों में दागियों का यह प्रतिशत लगातार बढ़ता ही जाएगा। इसके साथ ही बड़ा संकट यह भी है कि देश के निचले सदन में येन-केन-प्रकारेण करोड़पति बने नेताओं का वर्चस्व बढ़ता ही जा रहा है। इस बार संसद में चुनकर आए सांसदों में 504 करोड़पति हैं। ऐसे में क्या उम्मीद की जाए कि अपनी मेहनत की कमाई से जीवनयापन करने वाला आम आदमी कभी सांसद बनने की बात सोच सकता है? दागी एवं अपराधी राजनेता लोकतंत्र की एक बड़ी विडम्बना एवं विसंगति बनते जा रहे हैं। बात लोकसभा की ही नहीं है, विभिन्न राज्यों की सरकारों में भी कैसा विरोधाभास एवं विसंगति है कि एक अपराध छवि वाला नेता कानून मंत्री बन जाता है, एक अनपढ़ या कम पढ़े-लिखे प्रतिनिधि को शिक्षा मंत्री बना दिया जाता है। ऐसे ही अन्य महत्वपूर्ण मंत्रालय के साथ होता है। यह कैसी विवशता है राजनीतिक दलों की? अक्सर राजनीति को अपराध मुक्त करने के दावे की हकीकत तब सामने आ जाती है जब किसी राज्य या केंद्र में गठबंधन सरकार के गठन का मौका आता है। यह खुशी की बात है कि केन्द्र में बनी गठबंधन सरकार के मंत्रिमण्डल में ऐसी विवशता को काफी सीमा तक नियंत्रित किया गया है। सीमाओं पर राष्ट्र की सुरक्षा करने वालों की केवल एक ही मांग सुनने में आती है कि मरने के बाद हमारी लाश हमारे घर पहुंचा दी जाए। ऐसा जब पढ़ते तो हमारा मस्तक उन जवानों को सलाम करता है, लगता है कि देश भक्ति और कुर्बानी का माद्दा अभी तक मरा नहीं है। लेकिन राजनीति में ऐसा आदर्श कब उपस्थित होगा। राजनीति में चरित्र एवं नैतिकता के दीये की रोशनी मन्द पड़ गई है, तेल डालना होगा। दिल्ली सरकार में मंत्रियों के घरों पर सीबीआई के छापे और जेल की सलाखें हो या बिहार मंत्री परिषद के गठन में अपराधी तत्वों की ताजपोशी-ये गंभीर मसले हैं, जिन पर राजनीति में गहन बहस हो, राजनीति के शुद्धिकरण का सार्थक प्रयास हो, यह नया भारत -सशक्त भारत की प्राथमिकताएं होनी ही चाहिए।

सभी अपनी-अपनी पहचान एवं स्वार्थपूर्ति के लिए दौड़ रहे हैं, चिल्ला रहे हैं। कोई पैसे से, कोई अपनी सुंदरता से, कोई विद्वता से, कोई व्यवहार से अपनी स्वतंत्र पहचान के लिए प्रयास करते हैं। राजनीति की दशा इससे भी बदतर है कि यहां जनता के दिलों पर राज करने के लिये नेता अपराध, भ्रष्टाचार एवं चरित्रहीनता का सहारा लेते हैं। जातिवाद, प्रांतवाद, साम्प्रदायिकता को आधार बनाकर जनता को तोड़ने की कोशिशें होती है। पर हम कितना भ्रम पालते हैं। पहचान चरित्र के बिना नहीं बनती। बाकी सब अस्थायी है। चरित्र एक साधना है, तपस्या है। जिस प्रकार अहं का पेट बड़ा होता है, उसे रोज़ कुछ न कुछ चाहिए। उसी प्रकार राजनीतिक चरित्र को रोज़ संरक्षण चाहिए और यह सब दृढ़ मनोबल, साफ छवि, ईमानदारी एवं अपराध-मुक्ति से ही प्राप्त किया जा सकता है। राजनीति में चरित्र-नैतिकता सम्पन्न नेता ही रेस्पेक्टेबल (सम्माननीय) हो और वही एक्सेप्टेबल (स्वीकार्य) हो।

Hybrid, CNG या डीजल, कौन सी कार देती हैं बेस्ट परफॉर्मेंस...जानिए

परिवहन विशेष न्यूज

Hybrid vs CNG vs Diesel ऑटोमोबाइल सेक्टर नई-नई टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल करके यूजर्स के लिए बेहतरीन कार उपलब्ध करा रहे हैं। बीते कुछ वर्षों में ऑटोमोबाइल सेक्टर ने डीजल से पेट्रोल और सीएनजी और इलेक्ट्रिक गाड़ियों की तरफ मूव किया है। हम यहां पर डीजल Hybrid और CNG इन तीनों फ्यूल ऑप्शन पर चलने वाली कारों का कंपेरिजन कर रहे हैं।

नई दिल्ली। भारतीय मार्केट में कार खरीदने के लिए कई ऑप्शन मौजूद हैं, ऐसे में बहुत से लोगों को कार खरीदने में दुविधा रहती है कि उन्हें कौन-सी कार लेना सबसे सही रहेगा। उनके सामने एक और दुविधा बनी रहती है कि उनके लिए पेट्रोल, डीजल, Hybrid, CNG या इलेक्ट्रिक व्हीकल सेगमेंट की कारों में से कौन सी कार बेस्ट रहेगी।

हाइब्रिड कार

हाइब्रिड कार एक बेहतरीन टेक्नोलॉजी के साथ आती है, जो पेट्रोल इंजन को इलेक्ट्रिक पावर भी देती है। ये कारें ज्यादा पावरफुल और परफॉर्मेंस ड्रिवेन होती हैं। इन कारों का टॉर्क और बीचएपी पेट्रोल और CNG की तुलना में काफी बेहतर होता है। इनकी ज्यादातर कारों को चार्ज करने की जरूरत नहीं पड़ती है। इन कारों की मेंटेनेंस पेट्रोल कार जितनी ही होती है। पेट्रोल कारों की तुलना में इनका माइलेज काफी अच्छा होता है।

पेट्रोल-डीजल कार

आईसी इंजन वाले व्हीकल्स में पेट्रोल से चलने वाली कारें ज्यादा RPM पर बेहतर प्रदर्शन करती हैं। हालांकि, ये कार सबसे पहले विकसित होने वाली गाड़ी है तब से लेकर अब तक ये लंबी यात्रा के करने के लिए बहुत लोगों की पहली पसंद बनी हुई हैं। जो लोग नियमित रूप से लंबी दूरी तक कार ड्राइव करते हैं, उन लोगों को पेट्रोल से चलने वाली कारें हाई रनिंग कॉस्ट के चलते महंगी लग सकती हैं।

लंबी दूरी का सफर और बेहतर माइलेज के लिए डीजल कारों को पसंद किया जाता है। इसके अलावा डीजल कारें पेट्रोल कारों की तुलना में अधिक टॉर्क प्रदान करती हैं, जो कि लंबी दूरी पर अधिक सहज और आरामदायक क्रूजर बनाती है।

CNG कार

इन कारों का सबसे ज्यादा फायदा है कि ये एक सस्ती टेक्नोलॉजी है, लेकिन CNG किट की कारों के दाम सामान्य इंजन कारों से कुछ ज्यादा ही होते हैं। वहीं CNG का दाम भी पेट्रोल से कम है, तो लोगों को इन गाड़ियों का चलाना सस्ता पड़ता है। इन कारों की पावर कम होती है। साथ ही इनका पिकअप और टॉप स्पीड पेट्रोल व हाईब्रिड कारों की तुलना में काफी कम होती है। इन कारों की मेंटनेंस दूसरी सामान्य कारों के मुकाबले ज्यादा होती है।

नई मर्सिडीज कार के साथ नजर आए ऑरी, जानें कीमत से लेकर फीचर्स तक की डिटेल

Orry New Mercedes Maybach GLS 600 लोकप्रिय इन्फ्लुएंसर ऑरी को हाल में एक लग्जरी सफेद रंग की मर्सिडीज गाड़ी के साथ देखा गया है. कार की मौजूदा लुक इंटरनेट पर वायरल हो गई है. यह कार Mercedes Maybach GLS 600 है जो पूरी तरह से सफेद रंग की है. इस कार में डायमंड-कट फिनिश के साथ अलॉय व्हील दिए गए हैं और इसके आसपास सिल्वर टच दिया गया है.

नई दिल्ली। इन्फ्लुएंसर ऑरी तो अक्सर सोशल मीडिया पर ट्रेंड करते रहते हैं, लेकिन इस बार वो नहीं बल्कि उनकी कार ट्रेंड कर रही है. जिसका नाम Mercedes Maybach GLS 600 है. इसे अनोखे तरीके से मॉडिफाई किया है. इसकी बॉडी पैनल क्लासी है. इसे टॉप और लोअर फ्रंट ग्रिल को एक ही साटन व्हाइट रंग में रंगा गया है. ऑरी के इस कार को सबसे पहले उनके मुंबई के जिम सेशन के दौरान देखा गया था. आइए जानते हैं कि Mercedes Maybach GLS 600 किन फीचर्स से लैस है और इसकी कीमत कितनी है.

Mercedes Maybach GLS 600 के फीचर्स

मर्सिडीज की इस कार में ADAS यानी एडवांस ड्राइवर असिस्टेंस सिस्टम दिया गया है. इस गाड़ी का कलर सफेद है, जिसकी वजह से इसमें लगाएं गए सेंसर से लेकर स्किड प्लेट्स का कलर भी यही रखा गया है. इसमें 22-इंच के अलॉय व्हील्स लगाए गए हैं उनका भी रंग सफेद रखा गया है. इन सभी के अलावा कार सफेद रंग के ही फेंडर फ्लेयर, पिलर्स और रनिंग बोर्ड के साथ आती है.

Mercedes Maybach GLS 600 का इंजन

मर्सिडीज की यह कार 4.0 लीटर V8 इंजन के साथ आती है, जिसमें 48V माइल्ड-हाइब्रिड सिस्टम लगाया गया है. इस कार का इंजन सेटअप 557PS की पावर और 730Nm का टॉर्क जनरेट करता है. यह कार महज 4.9 सेकंड में 0 से 100 किमी प्रति घंटा की रफ्तार पकड़ लेती है. इस कार की टॉप स्पीड 250 किमी प्रति घंटा है.

Mercedes Maybach GLS 600 की कीमत

ऑरी की Mercedes Maybach GLS 600 लग्जरी कार की एक्स-शोरूम कीमत लगभग 3.5 करोड़ रुपये है. इसके पहले ऑरी को Mercedes Benz G350d के साथ देखा जा चुका है. इस कार का रंग भी सफेद है.

ऑरी के नाम पर नहीं है यह कार

Mercedes Maybach GLS 600 भारत में बेची जाने वाली सबसे महंगी और लग्जरी कारों में से एक है. आपको बाता दें कि इस कार में भले ही ऑरी घूमते हो, लेकिन यह उनके नाम पर रजिस्टर्ड नहीं है. Mercedes Maybach GLS 600 कार सखाराम बाबुराव के नाम पर रजिस्टर्ड है, जो महेश ट्रांसपोर्ट कंपनी के नाम से पॉपुलर है. ये एक लीज कंपनी है, जो लग्जरी कार खरीदती है और उन्हें दूसरों को उपलब्ध करवाती है. ऑरी के मामले में भी ऐसा ही है.

इंडियन मार्केट में जल्द लॉन्च हो सकती हैं ये फुल साइज एसयूवी , जानिए संभावित फीचर्स और स्पेसिफिकेशन

परिवहन विशेष न्यूज

Nissan X-Trail के जून या जुलाई 2024 में लॉन्च होने की उम्मीद है। चौथी पीढ़ी की निसान एक्स-ट्रेल एसयूवी को भारत में परीक्षण के दौरान देखा गया है। MG Gloster facelift का टेस्ट म्यूल हाल ही में भारतीय सड़कों पर देखा गया जिसमें कुछ अहम जानकारियां सामने आई हैं। बाहरी मोर्चे पर एसयूवी एमजी लोगो चौकोर आकार के स्प्लिट हेडलैंप और इंटीग्रेटेड एलईडी डीआरएल वाली तीन-स्लैट ग्रिल से लैस होगी।

नई दिल्ली। फुल साइज एसयूवी अपने दमदार प्रदर्शन के लिए जानी जाती हैं। इंडियन मार्केट में Toyota Fortuner से लेकर Mercedes-Benz GLS तक बेहतरीन Full Size SUV भारतीय बाजार में उपलब्ध है। इनके अलावा, इंडियन मार्केट में 2 नए फुल साइज एसयूवी एंट्री मारने वाली हैं। आइए, इनके बारे में जान लेते हैं।

Nissan X-Trail

Nissan X-Trail के जून या जुलाई 2024 में लॉन्च होने की उम्मीद है। चौथी पीढ़ी की निसान एक्स-ट्रेल एसयूवी को भारत में परीक्षण के दौरान देखा गया है। एक्स-ट्रेल के फ्रंट में वी-मोशन ग्रिल, एलईडी हेडलैंप और ट्वीक्ड फ्रंट बंपर है।

साइड में इस एसयूवी को अलॉय व्हील्स का नया सेट मिलता है। केबिन की बात करें, तो निसान एक्स-ट्रेल में 12.3 इंच का इंफोटेनमेंट सिस्टम, वेंटिलेटेड सीट्स, 5 साल की सब्सक्रिप्शन प्लान के साथ बिल्ट-इन गूगल और ADAS है।

हुड के नीचे, एक्स-ट्रेल में संभवतः 1.5-लीटर तीन-सिलेंडर टर्बो-पेट्रोल इंजन होगा। ये पावरट्रेन 201 बीएचपी पावर और 305 एनएम टॉर्क पैदा करेगा। इंजन एक CVT यूनिट से जुड़ा होगा। लॉन्च होने पर एक्स-ट्रेल एसयूवी भारतीय बाजार में स्कोडा कुशाक जैसी कारों को टक्कर देगी।

MG Gloster facelift

MG Gloster facelift का टेस्ट म्यूल हाल ही में भारतीय सड़कों पर देखा गया, जिसमें कुछ अहम जानकारियां सामने आई हैं। बाहरी मोर्चे पर एसयूवी एमजी लोगो, चौकोर आकार के स्प्लिट हेडलैंप और इंटीग्रेटेड एलईडी डीआरएल वाली तीन-स्लैट ग्रिल से लैस होगी।

2024 एमजी ग्लोस्टर में बड़े अलॉय व्हील, नए डिजाइन किए गए एलईडी टेल लैंप, पीछे की तरफ एक एग्जॉस्ट पाइप और पीछे की तरफ एक एलईडी लाइट बार भी हैं।

एमजी ग्लोस्टर फेसलिफ्ट के अंदर एक बड़ा टचस्क्रीन इंफोटेनमेंट डिस्प्ले, एक ऑल-डिजिटल इंस्ट्रूमेंट कंसोल, एक 360-डिग्री सराउंड कैमरा, वेंटिलेटेड और पावर्ड फ्रंट सीटें और एक वायरलेस चार्जर होगा।

एसयूवी में लेवल-2 एडास और एक पैनोरमिक सनरूफ मिलेगा। एमजी ग्लोस्टर फेसलिफ्ट में मौजूदा 2.0-लीटर डीजल इंजन को बरकरार रखने की उम्मीद है। 2WD वेरिएंट 160 bhp पावर और 375 Nm टॉर्क पैदा करता है, जबकि 4WD वेरिएंट 215 bhp पावर और 480 Nm टॉर्क देता है। दोनों इंजन आठ-स्पीड ऑटोमैटिक गियरबॉक्स से जुड़े हैं।

सड़क सुरक्षा को लेकर इंडिया और यून ने मिलाए हाथ, शुरू हुई रोड एक्सीडेंट में कमी लाने की कवायद

UN महासचिव के विशेष दूत जीन टॉड ने भारत में दोपहिया हेलमेट निर्माता संघ के अध्यक्ष राजीव कपूर के साथ मिलकर Helmets For Hope पहल की शुरुआत की है। इस अभियान को विभिन्न देशों में चरणों में क्रियान्वित किया जा रहा है और इसके सकारात्मक परिणाम सामने आए हैं। इस अभियान को 2023 में शुरू किया गया यह अभियान 80 देशों के 1000 शहरों में चलाया जाएगा।

नई दिल्ली। वैश्विक स्तर पर सड़क यातायात से होने वाली मौतों में कमी लाने के एक बड़े प्रयास के तहत इंडिया और यूएन एक साथ आए हैं। संयुक्त राष्ट्र महासचिव के विशेष दूत जीन टॉड ने भारत में दोपहिया हेलमेट निर्माता संघ के अध्यक्ष राजीव कपूर के साथ मिलकर 'Helmets For Hope' पहल की शुरुआत की है। आइए, इस इनिशिएटिव के बारे में जान लेते हैं।

Helmets For Hope

इस अभियान को विभिन्न देशों में चरणों में क्रियान्वित किया जा रहा है और इसके सकारात्मक परिणाम सामने आए हैं। यह दोपहिया और साइकिल सवारों को हर समय हेलमेट पहनने की आवश्यकता पर जोर देता है। इसके अतिरिक्त, यह लोगों को सड़क सुरक्षा और दुर्घटनाओं में होने वाली मौतों और चोटों को कम करने के तरीकों के बारे में शिक्षित करता है।

कब हुई शुरुआत ?

इस अभियान को 2023 में शुरू किया गया यह अभियान 80 देशों के 1000 शहरों में चलाया जाएगा। इसमें बिलबोर्ड, सार्वजनिक परिवहन विज्ञापन और सोशल मीडिया सहित विभिन्न मीडिया चैनलों का उपयोग किया जाएगा।

मेडिकल छात्रों को न्याय मिले

डा. वरिंदर भाटिया

सुप्रीम कोर्ट ने जुलाई में सुनवाई करने की बात कही है। वर्ष 2015 में एमबीबीएस, बीडीएस एडमिशन के लिए नेशनल लेवल मेडिकल प्रवेश परीक्षा (ऑल इंडिया प्री मेडिकल टेस्ट) हुआ करती थी। तब यह परीक्षा सीबीएसई कराता था। उस समय भी पेपर लीक की खबरें आई थीं। आरोप था कि एग्जाम सेंटर्स पर इलेक्ट्रॉनिक डिवाइसेस पर स्टूडेंट्स को क्वेश्चन पेपर के आंसर की भेजे गए हैं।

सवाल है कि क्या मेडिकल एंट्रेंस एग्जाम यानी नीट दुरुस्त तरीके से हुए हैं। नीट के रिजल्ट आए कुछ दिन बीत चुके हैं, लेकिन छात्रों में भ्रम आज भी बरकरार है। लाखों बच्चों को समझ नहीं आ रहा कि वे एनटीए ने जो नतीजे घोषित किए हैं, क्या उन्हें ही आखिरी मान लें या फिर दोबारा परीक्षा की तैयारी में जुट जाएं। इस मामले में छात्रों के हितों को सुरक्षित रखा जाना जरूरी है। मेडिकल छात्रों को न्याय मिलना चाहिए। जो छात्र कई सालों से इसमें कामयाबी की बात देख रहे थे, तथाकथित परीक्षा से जुड़ी अनियमितताओं ने उनका भविष्य खराब कर दिया है। इसके लिए देश हित में जिम्मेवारी को नियत किया जाए और लापरवाही के लिए पुनः परीक्षा आयोजित करना ही उपयुक्त होगा'

नीट परीक्षा को लेकर जिस तरह पूरे देश में बवाल मचा है, उसे देखकर यह सवाल उठने लगा है कि क्या नीट यूजी परीक्षा के नतीजे रद्द किए जाएंगे और नीट यूजी की परीक्षा एक बार फिर से कराई जाएगी। मालूम हो कि जब मई में नीट यूजी के पेपर हो रहे थे उस समय भी कई जगहों पर पेपर लीक की सूचनाएं आई थीं। तब भी तमाम अभ्यर्थियों ने इसको कैंसिल करने और दोबारा पेपर कराने की मांग की थी, लेकिन उस समय इस पर कुछ नहीं हुआ। अब जब रिजल्ट आया है तो एक बार फिर यह मामला गर्म हो गया है। हालांकि इस पर अभी तक स्थिति स्पष्ट नहीं हो सकी है। वर्ष 2024 में नीट की परीक्षा में लगभग 24 लाख बच्चे शामिल हुए थे। इनमें से 13 लाख से अधिक पास हुए। इसमें भी खास बात यह है कि इस बार की नीट परीक्षा के रिजल्ट में 67 बच्चों को टॉपर घोषित किया गया है। इन टॉपर्स को 720 में से 720 अंक मिले हैं। कुछ बच्चों को 718 और 719 नंबर तक मिले हैं, जिसके बाद नीट रिजल्ट को लेकर सवाल खड़े होने लगे हैं। तमाम लोगों ने रिजल्ट को लेकर परीक्षा कराने वाली एजेंसी एनटीए को भी कटघरे में खड़ा किया है, हालांकि एनटीए ने अपने आरोपों पर सफाई भी दी है। उसके बाद भी कुछ अभ्यर्थियों ने मध्य प्रदेश हाईकोर्ट में नीट के रिजल्ट को लेकर याचिका दायर कर दी है। इससे पहले जब नीट की परीक्षा 5 मई 2024 को हुई थी, उस समय राजस्थान के एक परीक्षा केंद्र पर यूजी पेपर लीक की खबरें आई थीं, जिसके बाद नीट यूजी परीक्षा के पेपर लीक का हवाला देते हुए कुछ उम्मीदवारों ने सुप्रीम कोर्ट में एक याचिका दायर की और इस परीक्षा को नए सिरे

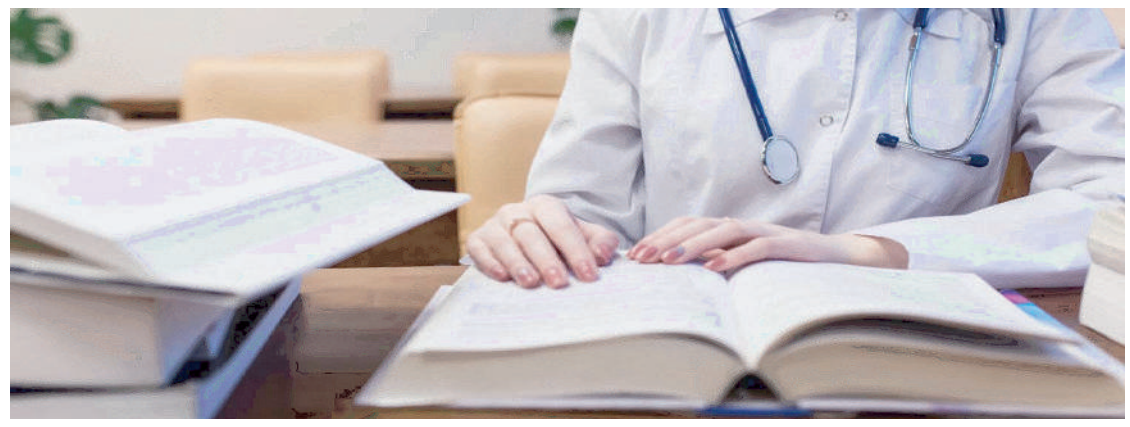

से कराने की मांग की।

सुप्रीम कोर्ट ने जुलाई में सुनवाई करने की बात कही है। वर्ष 2015 में एमबीबीएस, बीडीएस एडमिशन के लिए नेशनल लेवल मेडिकल प्रवेश परीक्षा (ऑल इंडिया प्री मेडिकल टेस्ट) हुआ करती थी। तब यह परीक्षा सीबीएसई कराता था। उस समय भी पेपर लीक की खबरें आई थीं। आरोप था कि एग्जाम सेंटर्स पर इलेक्ट्रॉनिक डिवाइसेस पर स्टूडेंट्स को क्वेश्चन पेपर के आंसर की भेजे गए हैं। उस समय भी यह मामला सुप्रीम कोर्ट पहुंचा था। तब 3 मई को परीक्षा हुई थी और 5 जून को रिजल्ट आना था। कोर्ट ने 15 जून को दिए अपने फैसले में कहा कि मेडिकल एंट्रेंस एग्जाम कैंसिल किया जाए और परीक्षा 4 हफ्ते में दोबारा से ली जाए। अब इस बार कोर्ट का क्या फैसला होता है, यह तो देखने वाली बात है, लेकिन इस बार परीक्षा कैंसिल जैसी कोई बात नजर नहीं आ रही। भारत में नीट को लागू हुए एक दशक से कुछ ही ज्यादा समय हुआ है और इसने ठहरे हुए पत्थर पर काई जमने जितनी बदनामी बटोर ली है। इसमें सबसे ताजा यह है कि नीट का संचालन कराने वाली राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी (एनटीए) को 2024 के लिए हुई मेडिकल की पात्रता एवं प्रवेश परीक्षा को लेकर लगाए गए आरोपों की जांच के वास्ते एक चार सदस्यीय समिति नियुक्त करनी पड़ी है। छह केंद्रों के लगभग 1500 छात्रों ने शिकायत की कि उन्हें परीक्षा पूरी करने के लिए पूरा समय नहीं दिया गया। ऐसा विभिन्न वजहों से हुआ। गलत प्रश्नपत्र का वितरण, फटी हुई ओएमआर शीट, तकनीकी गड़बडियां और ओएमआर शीट के वितरण में देरी।

अदालत ने प्रभावित छात्रों को ग्रेस मार्क्स देने की इजाजत दी। नतीजे प्रकाशित होने के बाद यह देखा गया कि कुछ छात्रों को 720 में 718 और 719 अंक मिले, जो मौजूदा मूल्यांकन पद्धति में असंभव है। यह भी आरोप था कि असामान्य रूप से ज्यादा संख्या में छात्रों ने पूरे अंक हासिल किए। एनटीए ने बाद में यह साफ किया कि अजीब लग रहे अंक अदालत के आदेशानुसार ग्रेस मार्क्स दिए जाने का नतीजा है और चूंकि यह एक आसान प्रश्नपत्र था, इसलिए कई सारे छात्रों ने पूरे अंक प्राप्त किए। लेकिन बात इतनी ही नहीं थी। परीक्षा से पहले नीट यूजी का प्रश्नपत्र लीक होने की खबरें आई थीं। एनटीए नीट यूजी की आधिकारिक उत्तर कुंजी में अशुद्धियां होने की बात कही गई थी और यूजी प्रश्नपत्रों के विसंगतिपूर्ण मूल्यांकन के आरोप थे। राजनीतिक दलों ने इन आरोपों की गहन जांच किसी सक्षम तृतीय पक्ष से कराने की मांग की है। और, छात्रों के समूहों ने भी दोबारा परीक्षा की मांग उठाई है। हर साल, खराब ढंग से प्रबंधित परीक्षा केंद्रों और अभ्यर्थियों को क्या पहनने की इजाजत है, इसे लेकर फिजूल की कड़ाई के आरोप सामने आते हैं। कदाचार (चीटिंग) से जुड़े ऐसे घपले उजागर हुए हैं जहां अभ्यर्थियों ने परीक्षा देने के लिए अपनी जगह दूसरों को भेजा है। याद रहे कि नीट को हर साल होने वाली सबसे बड़ी प्रवेश परीक्षाओं में से एक माना जाता है। लगभग 23 लाख छात्रों के इस परीक्षा में शामिल होने के मद्देनजर, इसमें कोई अचरज नहीं कि नीट का एक उतार-चढ़ाव भरा अतीत है। विशेषज्ञों का कहना है कि इस पैमाने पर होने वाली परीक्षा को पूरी तरह त्रुटिहीन बनाना असंभव है। लेकिन साल दर साल परीक्षा के दौरान घोर उल्लंघनों की खबरें सुर्खियां बन रही हैं। एनटीए को राज्यों की मदद से यह सुनिश्चित करना होगा कि तकनीकी गड़बडियां और कदाचार से जुड़े घपले न हों। इसमें प्रश्नपत्रों का समय से पहले जारी होना और वास्तविक अभ्यर्थी की जगह दूसरों का इस्तेमाल शामिल है।

अगर यह अधिक सख्ती बरतने और एक ज्यादा लंबी व ज्यादा सतर्कता भरी तैयारी से संभव है, तो ऐसा करने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी जानी चाहिए। इसके अलावा इन मांगों पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए कि नीट के सभी दाखिले सिंगल विंडो काउंसिलिंग के तहत आएं और पीजी दाखिलों के लिए जीरो पर्सेंटाइल मानदंड का पुनर्मूल्यांकन हो। साथ ही निजी मेडिकल कॉलेजों में फीस का सख्त नियमन हो। कुल मिला कर इस साल नीट में हुई खटपट का मामला खत्म होने का नाम नहीं ले रहा है। अब कुछ पीड़ितों ने न्याय की आस में देश की सर्वोच्च अदालत का दरवाजा खटखटा दिया है। सवाल है कि क्या मेडिकल एंट्रेंस एग्जाम यानी नीट दुरुस्त तरीके से हुए हैं। नीट के रिजल्ट आए कुछ दिन बीत चुके हैं, लेकिन छात्रों में भ्रम आज भी बरकरार है। लाखों बच्चों को समझ नहीं आ रहा कि वे एनटीए ने जो नतीजे घोषित किए हैं, क्या उन्हें ही आखिरी मान लें या फिर दोबारा परीक्षा की तैयारी में जुट जाएं। इस मामले में छात्रों के हितों को सुरक्षित रखा जाना जरूरी है। मेडिकल छात्रों को न्याय मिलना चाहिए। जो छात्र कई सालों से इसमें कामयाबी की बात देख रहे थे, तथाकथित परीक्षा से जुड़ी अनियमितताओं ने उनका भविष्य खराब कर दिया है। इसके लिए देश हित में जिम्मेवारी को नियत किया जाए और प्रशासनिक लापरवाही के लिए पुनः परीक्षा आयोजित करना ही उपयुक्त होगा। छात्रों के साथ अगर अन्याय होता है तो उनके डिप्रेशन में चले जाने की संभावनाएं रहती हैं।

संपादकीय

सरकार नई, चेहरे पुराने

केंद्रीय मंत्रिपरिषद के स्पष्ट संकेत हैं कि यह निरंतरता की ही सरकार है। भाजपा के अल्पमत का तनाव और गठबंधन के दबावों, सवालों की जरा-सी भी चिंता प्रधानमंत्री मोदी को नहीं है। कार्यभार संभालने के बाद प्रधानमंत्री ने प्रथम हस्ताक्षर 'किसान सम्मान निधि' वाली फाइल पर किए, तो किसी भी मंत्री को जानकारी नहीं थी। प्रधानमंत्री ने 9.30 करोड़ किसानों के लिए 20,000 करोड़ रुपए जारी किए। किसानों की 17वीं किस्त दी गई। शाम को कैबिनेट की प्रथम बैठक में ही गरीबों के लिए ऐसे 3 करोड़ आवास बनाने की योजना को स्वीकृति दी गई, जिनमें शौचालय, एलपीजी, नल और बिजली के कनेक्शन की सुविधाएं भी होंगी। ये मकान ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में बनाए जाएंगे। मोदी सरकार अपने 10 साला कालखंड में ऐसे 4.21 करोड़ मकान बनाकर बांट चुकी है। सबसे महत्वपूर्ण यह रहा कि पिछली सरकार में जो मंत्री रक्षा, गृह, सडक़ परिवहन, विदेश, वित्त, शिक्षा, रेल, पेट्रोलियम, वाणिज्य-उद्योग, कानून और पर्यावरण आदि मंत्रालयों के प्रभारी थे, उन्हीं चेहरों को यथावत कार्यभार सौंपा गया है। भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा 2014 की मोदी सरकार में ही स्वास्थ्य मंत्री थे। अब 2024 की कैबिनेट में भी वह स्वास्थ्य मंत्री बनाए गए हैं। ज्योतिरादित्य सिंधिया, सर्बानंद सोनोवाल, किरेन रिजीजू, प्रह्लाद जोशी, मनसुख मांडविया, गजेन्द्र शेखावत, जी किशन रेड्डी आदि पुराने मंत्री हैं, जिन्हें नए मंत्रालय के साथ नई सरकार का हिस्सा बनाया गया है। कई राज्यमंत्रियों के भी मंत्रालय वही पुराने रखे गए हैं।

सबसे संवेदनशील सुरक्षा की कैबिनेट कमेटी में भी कोई फेरबदल नहीं किया गया है। प्रधानमंत्री मोदी पर तेलुगूदेशम पार्टी (टीडीपी), जनता दल-यू, शिवसेना, एनसीपी सरीखे सहयोगी दलों का कोई दबाव और तनाव दीखता नहीं है। उन्हें प्रधानमंत्री ने अपने विशेषाधिकार के अनुसार मंत्रालय सौंपे हैं। सरकार में प्रधानमंत्री समेत 72 मंत्री हैं, जिनमें से 61 मंत्री भाजपा के हैं। हिंदी भाषी क्षेत्रों से 36 मंत्री और दक्षिण भारत से 13 मंत्री लिए गए हैं। महिला मंत्रियों की संख्या 7 है। शायद इसी आंकड़े की परंपरा रही है। मौजूदा मंत्रिपरिषद की औसत आयु 58.7 साल है, जबकि 2019 में यही 60 साल के कुछ ऊपर थी। हालांकि कैबिनेट में 7 पूर्व मुख्यमंत्री हैं, लेकिन हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर को ऊर्जा, आवास एवं शहरी विकास मंत्रालय दिए गए हैं और मध्यप्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान को कृषि और ग्रामीण विकास मंत्रालय का दायित्व सौंपा गया है। रेल के साथ-साथ सूचना-प्रसारण मंत्रालय भी अश्विनी वैष्णव को दिया गया है। वह प्रौद्योगिकी सम्पन्न मंत्री हैं, सूचनाओं को दबाने या बांटने के खेल से अनभिज्ञ हैं, लिहाजा सूचना मंत्रालय दिए जाने पर आश्चर्य होता है। संभव है कि जब कैबिनेट का विस्तार या फेरबदल होगा, तो यह मंत्रालय किसी और मंत्री को दिया जा सकता है। इसी तरह ऊर्जा मंत्रालय भी तकनीक और विज्ञान पर आधारित मंत्रालय है। खट्टर के संदर्भ में तालमेल मुश्किल हो सकता है।

बहरहाल शिवराज सिंह चौहान पर इतना बोझ, दायित्व डाल दिया गया है, जितना उन्होंने मुख्यमंत्री के 16.5 सालों के दौरान महसूस नहीं किया होगा। किसान और गांव परस्पर पूरक हैं। नए मंत्री के सामने जलता और उबलता-सा सवाल होगा कि फसलों के न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) की कानूनी गारंटी का क्या किया जाए? किसानों की आय कब तक और किस तरह दोगुनी की जा सकती है? कृषि वैज्ञानिक और अर्थशास्त्री एमएसपी की कानूनी गारंटी के पक्ष में नहीं हैं, लेकिन एमएसपी में निरंतर बढ़ोतरी के समर्थक हैं। जब किसान आंदोलन समाप्त किया गया था, तब प्रधानमंत्री मोदी ने किसानों को आश्वस्त किया था कि एमएसपी के कानूनी दर्जे के बारे में जरूर कुछ किया जाएगा। एक कमेटी भी बनाई गई थी, लेकिन आज तक कोई निष्कर्ष सामने नहीं है। आम चुनाव में किसानों के तनाव, गुस्से और संकट ने कई राज्यों में भाजपा की पराजय की जमीन तैयार की थी, लिहाजा यह मुद्दा प्राथमिकता का है।

राय

फिर उपचुनाव की गंगा

रिकार्ड और रिपोर्ट में फर्क होता है। पिछले उपचुनावों का रिपोर्ट कार्ड अपने रिकार्ड से भिन्न होने के कारण लोकसभा से भिड़ गया, इसलिए इस बार तीन निर्दलीयों के लिए मशक्कत बढ़ जाती है। विधानसभा अध्यक्ष ने पहले ही निर्दलीय विधायकों की आंखों से सुरमा चुराया और वे इस्तीफे के बावजूद कांग्रेसी बागियों के साथ उपचुनाव की गंगा में तब हाथ नहीं धो पाए। अब उनकी बारी आई है, हालांकि वे भी बागी बनकर ही उपचुनाव जीतना चाहते हैं। उपचुनाव जीतकर सुक्खू सरकार को गलत साबित करना चाहते हैं। कल तक उनके साथ छह कांग्रेसी भी सुक्खू सरकार के खिलाफ मैदान में उतरे थे। उनके रिपोर्ट कार्ड में मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू की शैली के खिलाफ जो भी था, वह पूरी तरह खरा साबित नहीं हुआ और बाजी चार-दो के हिसाब में सरकार को फतवा नहीं सुना सकी। अब शेष बचे तीन निर्दलीय विधायकों की कहानी का मंचन नालागढ़ में केएल ठाकुर, देहरा में होशियार सिंह तथा हमीरपुर के आशीष शर्मा करेंगे। पुनः मशक्कत यह भी कि क्या भाजपा सीधी अंगुली से उन्हें अपना टिकट देगी या कहीं सख्त-नरम के बीच गलबहियां बदल जाएंगी। जो भी हो और जितनी भी जीत हो, भाजपा के आंकड़े बदल सकते हैं। इस बार फिर कांग्रेस को अपनी क्षतिपूर्ति दूर करनी है तो निशाने पर आशीष शर्मा, होशियार सिंह व केएल ठाकुर आएंगे। यह दीगर है कि लोकसभा चुनाव की परिपाटी में यह तिकड़ी सफलतापूर्वक भाजपा के हाथ में रिकार्ड बना चुकी है, फिर भी हर चुनाव और मुद्दे अलग होते हैं।

अब न सरकार के खिलाफ और न ही विधानसभा के हालात इतने सरल हैं कि एकतरफा हो जाएं। जाहिर है भाजपा के लिए यह बिसात इन्हीं मोहरों पर कमाल कर सकती है। इस बार पुनः हमीरपुर संसदीय क्षेत्र के ही दो विधानसभा हलकों में उपचुनाव अपनी परिभाषा गढ़ेगा। पिछली बार सुजानपुर, बड़सर, गगरेट तथा कुटलैहड़ में उपचुनाव हुए तो इस बार हमीरपुर व देहरा में यही क्षेत्र फिर दांव लगा रहा है। इसके अलावा शिमला संसदीय क्षेत्र का नालागढ़ मैदान पर आया है। यानी भाजपा की मजबूत दीवारों के सामने प्रदेश सरकार की विश्वसनीयता पर ये उपचुनाव पुनः दोनों पार्टियों के बीच कुछ समाधान तो कुछ व्यवधान पैदा कर सकते हैं। हालांकि इनसे राजनीतिक जरूरतें किसी भी दल की पूरी नहीं हो रहीं, फिर भी तीन पूर्व विधायकों के अस्तित्व पर कई प्रश्न लेकर ये उपचुनाव खड़े हैं। उपचुनाव की वजह अब पूरी तरह बेमानी है, लेकिन सरकार के आंकड़ों में यह जंग सत्ता का नशा भर सकती है। पहले भी छह उपचुनाव मुख्यमंत्री की सरपरस्ती में हुए और चार सीटें जीतकर हर स्थिति में कांग्रेस बहुमत पा गई और अगर इस बार भी अनुकूल परिणाम आए तो सरकार का पलड़ा और सुखविंदर सुक्खू का प्रभुत्व भारी होगा। भाजपा ने हिमाचल की 61 सीटें पहले ही जीतकर लोकसभा के हर खंड में विजयश्री प्राप्त की है, लिहाजा नाक की लड़ाई इस बार मुद्दे और मुराद पर होगी। इस सबके बावजूद आम मतदाता के लिए इन उपचुनावों में न कोई अवसर, न राहत, बल्कि अनिश्चय की स्थिति में अपने लिए कुछ सुनिश्चित जरूर करना है। सरकार को अपना पक्ष देकर उसे सत्ता पक्ष का विधायक मिलता है, तो उसके अलग मायने होंगे, जबकि चुनावी प्रश्न फिर से यह तो पूछ ही लेंगे कि कारवां लूटा किसने। अंततः जिस जनता ने कांग्रेस और भाजपा को दरकिनार करके निर्दलीय चुने थे, वह साहसी, बुलंद व ऐतिहासिक हस्ती तो रही ही होगी। यह अलग बात है कि उपचुनाव पुनः हमीरपुर, सोलन व कांगड़ा को आदर्श आचार संहिता के पिंजरे में अगले एक महीने के लिए डाल देंगे। हिमाचल को अब केंद्र व राज्य सरकार के उपयुक्त फैसलों व कार्यों की जरूरत है, लेकिन हालात के चाबुक निरर्थक पीछा कर रहे हैं और इसी परिप्रेक्ष्य में अभी मुख्य संसदीय सचिव पद की वैधता पर निर्णय आने वाला है।

कुंठाओं और कट्टरवाद को तिलांजलि दें

जिनके मन में बचपन में ही ऐसे विचार, ऐसे संस्कार भर दिए गए हों, उनमें दक्षिण पंथी, उच्च जाति भावना, श्रेष्ठ होने का एहसास, अहंकारी होना स्वाभाविक है'

एक उच्च जातीय हिंदू हूं। मैंने अपने नाम शेर सिंह के साथ अपना कुलनाम (सरनेम) का कभी उपयोग नहीं किया। हम खेती-किसानी वाले उच्च जाति परिवार से हैं। मेरे पिता केवल हिंदी में अपने हस्ताक्षर भर कर सकते थे। हमारे दादा, परदादा, पुरखे तो अक्षरों की अहमियत को शायद ही जानते थे। ऐसा संभवतः जिले का सर्वाधिक पिछड़ा क्षेत्र होने के परिणामस्वरूप रहा होगा। हम मूलतः ऐसे क्षेत्र से हैं जो राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय सीमाओं से सटा हुआ है। बहुत दूरदराज और अत्यंत पिछड़ा इलाका होने के बावजूद यहां जातपात, छुआछूत का बहुत अधिक प्रचलन था, और आज भी है, बेशक थोड़ा कुंद पड़ गया हो! कई दृष्टांतों में से बचपन के एक-दो का उल्लेख करना चाहूंगा। जब कभी अपने बचपन को याद करता हूं, तो मुझे अपने मूचाण्ड (अछूत) और उसके परिवार बरबस याद हो आते हैं। जब कभी कोई त्योहार, उत्सव, शादी-ब्याह, जीने-मरने का अवसर होता, तो वे परिवार सहित हमारे गांव, हमारे घर पहुंच जाते थे। परिवार में उनके छोटे-छोटे बच्चे, महिलाएं सभी होते थे। वे हमारे दोमंजिला घर के भूतल में प्रवेश द्वार से बाहर बने गोबर लिपे कच्चे और खुले आंगन में नंगी जमीन पर कोई उकडूं, कोई पालथी मारकर बैठते। उन्हें घर के अंदर आने की तो क्या, सीढियों को छूने तक की इजाजत नहीं थी। घर में उनके लिए कुछ विशेष नहीं बनता था। त्योहारों आदि में घर में जो कुछ बना होता, उन्हें दे दिया जाता था।

वे वहीं बैठकर अपने साथ लाए थाली, प्याली आदि में खाते, पीते और बचे हुए खाने को पोटलियों में बांधकर ले जाते। हम बच्चे छत से कौतुहल, आश्चर्य लेकिन उपहास भरी नजरों से उन्हें देखते। वे हमें मालिक कहते थे। हमें मालिक तथा उच्च जाति का होने का मनोवैज्ञानिक तौर पर गर्व और घमंड का एहसास होता। हालांकि यह हमारा अहंकार और गलतफहमी थी। वे हमारे खेतों में आकर बेगारी भी करते। बदले में शाम को अपने घर जाते समय उन्हें खड़ा, सबूत अनाज आदि दे दिया जाता। इस प्रकार बचपन में ही हमारे अंदर उच्च जाति की भावना और छुआछूत का बीजारोपण हो चुका था। बौद्ध धर्म बहुल क्षेत्र में मु ी भर हिंदू, और वो भी सवर्ण उच्च जाति का होने की भावना हमेशा बनी रही। जब किशोर और युवावस्था में पहुंचे तो एक स्कूल में अध्यापक द्वारा दलित जाति के बच्चों को सबसे अलग बिठाने और सभी के लिए रखे पानी के पात्र को छूने तक की मनाही देखी। मुझे थोड़ा अचंभा भी हुआ था क्योंकि तब तक कुछ पढ़-लिख चुका था। इस प्रकार ऊंच-नीच की भावना को अच्छे से जान और समझ चुका था। लेकिन मैंने अध्यापक के इस व्यवहार को आपत्तिजनक मानने के बावजूद किसी तरह का हस्तक्षेप, विरोध नहीं किया। मैंने एक प्रकार से अपनी अंतरात्मा की आवाज का गला घोंट दिया था। बाद के वर्षों में देश के लगभग हर राज्य, शहर, नगर में आने-जाने और प्रवास का अवसर मिला। इस आवागमन के कारण मेरे अंदर बसी जाति की भावना कुछ हद तक दब-छिप गई। लेकिन पूरी तरह मिटी नहीं थी।

बचपन में मिले संस्कार आसानी से नहीं छूटते हैं। जिसके मन-मस्तिष्क में ऐसे संस्कार भर दिए गए हों, बाद के जीवन में उन्हें बदल पाना बहुत कठिन है। यह मैंने तब अनुभव किया जब एक बार गर्मियों के दिनों में अहमदाबाद से दिल्ली को आ रहा था। कोटा-रतलाम के बीच किसी जगह में बहुत जोर की प्यास लगी थी। पास का पानी खत्म हो चुका था।

ट्रेन रुकती, चलती सी चल रही थी। किसी भी स्टेशन में पानी का नल चलता नहीं दिखता था। मैं ट्रेन से पानी के लिए उतरता, चढ़ता और खाली बोतल लिए वापस ट्रेन में चढ़ आता। मेरी सीट के पास गोल टोपी पहने, सफेद वस्त्रों में एक सज्जन बैठे हुए थे। उन्होंने मेरी परेशानी जानकर अपनी सुराही से मुझे पानी देना चाहा। मैंने उन्हें एक नजर देखा और भयंकर प्यास के बावजूद, पानी पीने से मना कर दिया। मैं समझ गया था कि वह मुसलमान है। उच्च सवर्ण जाति का मैं मुसलमान का दिया पानी कैसे पीता! अपने द्वारा ऐसा करने का कारण मैं समझ गया था। हम लोग क्योंकि धर्मभीरू और जातपात को मानने वाले लोग थे, इसलिए बचपन में हमारी मां ने मुसलमानों के हाथों कुछ भी खाने-पीने की सख्त मनाही कर रखी थी। हमारे सेब के बाग का चौकीदार खान को हमारे घर की देहरी को स्पर्श करने की इजाजत तक नहीं थी। जब हम छोटे-छोटे बच्चे आपस में झगड़ते, लड़ते तो मां अक्सर हमें मुस्रमां कहती। मुसलमान वे गाली की तरह प्रयोग करती थीं। यह विरासत में मिले संस्कारों का फल था। यह और बात है कि आज मेरे बहुत से अजीज मित्र, सम्मानित दोस्त मुस्लिम हैं। मुझे उनकी मित्रता पर गर्व है। अब सोचता हूं, तब कितने संकुचित मेरे विचार थे। कितना गिरा हुआ मेरा दृष्टिकोण था। कैसी तुच्छ मेरी मानसिकता थी! जब उम्र और बढ़ी तथा देश के विभिन्न राज्यों, अलग-अलग नगरों, शहरों में प्रवास और आना-जाना शुरू हुआ, तो देश-दुनिया, सामाजिक, नैतिक, दुनियादारी और धार्मिक समझ भी विकसित हुई। बचपन में मन पर घर कर बैठी सोच, संस्कार कुछ हद तक कुंद पडने लगे। जीवन में व्यावहारिकता अधिक पनपने लगी। लेकिन अपने उच्च जाति का एहसास हमेशा दूसरों से ऊंचा होने का आभास दिलाता रहा।

यद्यपि केवल शेर सिंह नाम होने से अधिकांश लोग मुझे निम्न जाति से होने का अनुमान लगाते रहे! कभी-कभी विचार आता है कि जिनके मन में बचपन में ही ऐसे विचार, ऐसी भावना, ऐसे संस्कार भर दिए गए हों, तो उनमें वो आजकल के गौ रक्षक, स्वयंसेवक, बजरंग दल, दक्षिण पंथी, उच्च जाति भावना, श्रेष्ठ होने का एहसास, अहंकारी होना स्वाभाविक है। किसी को भी अपने से तुच्छ समझना विशेषकर दलित और मुसलमानों को, उच्च जाति के लोगों की आम मानसिकता है। ऐसी सोच, विचार वालों ने अपने मत अधिकार का प्रयोग कर अपनी पसंद की सरकार बनाई है। और, जब सरकार उनकी मनमाफिक हो, तो वे अपनी दबी, सोई भावनाओं को व्यावहारिक जामा पहनाने में, गौरक्षक, देशभक्त, क्रांतिकारी दर्शाने में क्यों पीछे रहें? मन की मुरादें पूरी करने में जिस तरह का कार्य, व्यवहार, प्रचार, प्रसार किया जा रहा है, वह देश हित में तो बिल्कुल नहीं है। बहरहाल कट्टरवाद और दूसरों को अपने से हीन समझने की भावना को तिलांजलि देने में ही राष्ट्र की भलाई है। सभी की यह सोच होनी चाहिए।

शेर सिंह

मैं, बीवी और अखबार

ज्यों ही सुबह हॉकर अखबार का रस निकाल अखबार दरवाजे की दरार में से ड्राइंग रूम में घुसाता है तो मैं आए शौच को वहीं रोक तुरंत उस पर यों झपट पड़ता हूं जैसे बाज अपने शिकार पर। विवाह के बाद से मेरा और अखबार का रिश्ता बाज और शिकार सा है। बीवी मेरा शिकार करती है तो मैं अखबार का। हे अखबारजीवियो! हमारे घर अखबार इसलिए नहीं आता कि हम आसपास की जानकारी से अपडेट रहें। खबरिया चौनलों से भी तेज और सटीक खबरें तो मुझे मेरे पड़ोसी शर्मा जी से बिन मांगे ही व्हाट्सैप पर सटाक मिल जाती हैं। बावजूद इसके ज्यों ही हमारे घर में अखबार आता है, घर का मुखिया होने के नाते अखबार पर न होते हुए भी पहला हक मेरा ही होता है। क्योंकि उस वक्त सब सोए होते हैं। सो मैं उस पर उस हक को बनाए रखता हूं। हक कोई आपको आपकी थाली में परोस कर देने वाला नहीं। हक आजकल बनाए रखने का जमाना है। इसलिए आपको अपने हक पर हर हाल में खुद ही पूरा हक जमाए रखना चाहिए। आप अपना हक पाना चाहते हों तो। जैसे ही अखबार मेरे हाथ में आता है, मैं पहले पेज की तमाम मुख्य खबरों को दरकिनार करता केवल उस पेज पर जाता हूं, जहां मेरे मतलब का आज का राशिफल छपा होता है। मेरे लिए शेयर बाजार कोई मायने नहीं रखता। वह आसमान छुए या फिर धूल चाटे। मेरे वेतन से बाजार का ही पूरा हो जाए तो उसे ही शेयर बाजार में लगा मानूं।

मेरे लिए दिल्ली में पानी नहीं है, कोई समस्या नहीं। जिनकी समस्या है उससे वे निपटें। यहां समाधान साझे होते हैं, पर समस्याएं अपनी अपनी। मेरे घर तो चौबीसों घंटे पानी रहता है, पानी छोडने वाले की कृपा से। बस, हर महीने उसे दो सौ देने पड़ते हैं। वह मेरी टंकी के पास से तब तक नहीं हिलता जब तक वह ओवरफ्लो नहीं हो जाती। मेरे लिए घोटालों से कोई लेना देना नहीं। हम हैं तो घोटाले हैं। घोटाले हमारी राष्ट्रीय धरोहर हैं। हमें उन्हें ईमानदारी से करते रहना चाहिए। हमें पूरी ईमानदारी से उनके होने में सहयोग देते रहना चाहिए। क्योंकि घोटाले करने से कइयों को घोटालों की जांच करते हुए घोटाले करने का अवसर मिलता रहता है। जैसे ही आज के अखबार को दुरुस्त करते, पेज दर पेज बदलते हुए एक पेज पर आज का राशिफल देखता हूं तो मेरे दिल की धडक़नें तेज हो जाती हैं। डरा सहमा सा अपनी राशि का राशिफल सांसें रोके यों पढ़ता हूं जैसे कोई राष्ट्रीय आपदा का समाचार पढ़ रहा होऊं। जब आज के राशिफल में छपा राशिफल मेरी फेवर वाला होता है तो मेरे चेहरे से चिंताओं की सारी रेखाएं उडऩछू हो जाती हैं। दिल की धडक़नें सामान्य से सामान्य होने लगती हैं। दिल ही नहीं, सिर से पांव तक मैं बाग बाग हो जाता हूं। उस वक्त मत पूछो मुझे कितना सुकून मिलता है! उस वक्त मैं ये भी भूल जाता हूं कि मैंने बीस मिनट से शौच रोके रखा है। धीरे धीरे तब अपनी राशि के राशिफल पढ़ते हुए मैं पॉजिटिव अनर्जी से सराबोर होने लगता हूं। मेरी नस नस में बेकार की कामयाबी दौडऩे लगती है। मन करता है इसी वक्त आसमान से तारे तोड़ लाऊं। मन करता है इसी वक्त हिमालय को फतह कर लूं। कल को पता नहीं मेरे राशिफल में क्या लिखा मिले।

अखबार में अपना राशिफल पढने के बाद मैं अनर्जी फुल अपनी बीवी को चाय बनाकर जगाता हूं। उसे चाय और अखबार एक साथ पीने की आदत है। चाय उसके सामने रखता हूं तो वह अंगड़ाई लेती एक हाथ चाय तो दूसरा अखबार की ओर बढ़ाती है। फिर चाय किनारे छोड़ उसमें इस मौसम के आज के सौंदर्य टिप्स पढ़ती उनमें इतनी लीन तल्लीन हो जाती है, अपने खुरदरे चेहरे पर हाथ फेरते हुए मानो वह किसी राष्ट्रीय समस्या पर किसी महान कमर्शियल विचारक का आलेख पढ़ रही हो। तब मुझे रोज की तरह उसे पुनः याद दिलाना पड़ता है कि बेगम! प्लीज! चाय ठंडी हो रही है। ये दूसरी बात है कि सौंदर्य टिप्सों का अपने चेहरे पर प्रयोग करते करते उसके चेहरे में मुझे तो कम से कम आज तक कतई ग्लो नहीं दिखा। बीस सालों से हर पल केवल एक ही चेहरा देख रहा हूं, इसकी एक वजह यह भी हो सकती है। जबसे मैं उसे जानता हूं, दबी जुबान में कहूं तो उसे परिवार से अधिक चिंता अपने चेहरे के सौंदर्य की रही है। हो भी क्यों न! आज का दौर चरित्र चमकाने के बदले चेहरे चमकाने का दौर है। चमके चरित्रों पर समाज आज उतना नहीं रीझता जितना चमकीले चेहरों को देख पागल हो उठता है।

अशोक गौतम

भारत के दो पड़ोसियों की खस्ताहाल अर्थव्यवस्था को लेकर विश्व बैंक ने चेताया

भारत के दो पड़ोसी देशों की अर्थव्यवस्था डगमगा रही है। एक देश है मालदीव जिसकी अर्थव्यवस्था को भारत के साथ विवाद के बाद तगड़ा झटका लगा है। पर्यटन आधारित अर्थव्यस्था वाले देश की हालत पतली हो रखी है। वहीं म्यांमार की अर्थव्यस्था भी पहले से भी ज्यादा सुस्त रफ्तार से आगे बढ़ रही है जो चिंताजनक है। विश्व बैंक ने इन दोनों देशों को लेकर चिंता जाहिर की है।

माले। भारत के दो पड़ोसियों मालदीव और म्यांमार की खस्ताहाल अर्थव्यवस्था को लेकर विश्व बैंक ने चेतावनी दी है। विश्व बैंक ने कहा है कि मालदीव दशकों से अपने साधनों से अधिक खर्च कर रहा है। खर्च में तेज बढ़ोतरी और सब्सिडी ने घाटा बढ़ा दिया है। उसे उच्च ऋण संकट जोखिम और वित्तपोषण चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है।

धीमी पड़ी मालदीव की अर्थव्यवस्था

मालदीव, नेपाल और श्रीलंका के लिए विश्व बैंक के कंट्री डायरेक्टर फारिस एच हदाद-जर्वोस ने कहा कि मालदीव की वार्षिक ऋण सेवा जरूरतें वर्तमान और अगले वर्ष के लिए 512 मिलियन डॉलर और 2026 में 1.07 अरब डॉलर होने की संभावना है। फारिस ने कहा कि देश का आर्थिक इंजन पर्यटन उद्योग धीमा हो गया है। देश की अर्थव्यवस्था इस साल 4.7 प्रतिशत बढ़ने का अनुमान है, जो पिछले अनुमान से कम है। यह विकास की गति में नरमी को दर्शाता है।

म्यांमार की स्थिति भी चिंताजनक

वहीं, म्यांमार को लेकर बुधवार को जारी रिपोर्ट के अनुसार, विश्व बैंक के अर्थशास्त्रियों का अनुमान है कि मार्च में समाप्त हुए वर्ष में देश की अर्थव्यवस्था एक प्रतिशत वार्षिक गति से बढ़ी है। यह पहले की अपेक्षा अधिक धीमी है। इस वित्तीय वर्ष में भी इसी तरह की विकास दर की उम्मीद है। विश्व बैंक का सर्वे पिछले छह महीनों में आर्थिक गतिविधियों में बहुत कम या कोई सुधार नहीं होने का सुझाव देता है।

जमा पर ब्याज दरें चरम पर हैं, मध्यम अवधि में नीचे आने की उम्मीद: एसबीआइ चेयरमैन

SBI के चेयरमैन दिनेश कुमार खारा ने कहा है कि जमा पर ब्याज दरें अपने चरम पर हैं और मध्यम अवधि में इनके नीचे आने की उम्मीद है। खारा ने कहा कि हमें उम्मीद है कि अक्टूबर से शुरू होने वाली तीसरी तिमाही में शायद मुद्रास्फीति के चार प्रतिशत की ओर बढ़ने की कुछ संभावना होगी। आइए पूरी खबर के बारे में जान लेते हैं।

नई दिल्ली। भारतीय स्टेट बैंक (SBI) के चेयरमैन दिनेश कुमार खारा ने कहा है कि जमा पर ब्याज दरें अपने चरम पर हैं और मध्यम अवधि में इनके नीचे आने की उम्मीद है। देश के सार्वजनिक क्षेत्र के प्रमुख बैंक ने यह भी कहा कि आरबीआइ चालू वित्त वर्ष की तीसरी तिमाही से ब्याज दर चक्र को आसान बनाना शुरू कर सकता है।

मुद्रास्फीति बढ़ने की संभावना

पिछले सप्ताह आरबीआइ ने मजबूत आर्थिक वृद्धि के बीच मुद्रास्फीति पर ध्यान केंद्रित करते हुए लगातार आठवीं बार रेपो रेट को यथावत रखा था। खारा ने कहा- हमें उम्मीद है कि अक्टूबर से शुरू होने वाली तीसरी तिमाही में शायद मुद्रास्फीति के चार प्रतिशत की ओर बढ़ने की कुछ संभावना होगी और वह सही समय होगा जब हम आरबीआइ से नीतिगत दर में कुछ कटौती की उम्मीद कर सकते हैं।

वैश्विक स्थिति

स्विट्जरलैंड, स्वीडन, कनाडा और यूरो क्षेत्र जैसी उन्नत अर्थव्यवस्थाओं के कुछ केंद्रीय बैंकों ने वर्ष 2024 के दौरान दरों को कम करने का चक्र शुरू कर दिया है। दूसरी ओर, अमेरिकी फेडरल रिजर्व द्वारा ब्याज दर में कटौती की बाजार उम्मीदें, जो पहले अधिक थीं, अब कम हो गई हैं।

सोने और चांदी की कीमतों में एकदम से आया उछाल, जानिए अपडेटेड प्राइस

राष्ट्रीय राजधानी में आज सोने की कीमत 250 रुपये बढ़कर 72200 रुपये प्रति 10 ग्राम हो गई। वहीं चांदी की कीमतें भी 800 रुपये बढ़कर 91500 रुपये प्रति किलोग्राम हो गईं। पिछले सत्र में गोल्ड 71950 रुपये प्रति 10 ग्राम पर बंद हुआ था। वहीं चांदी पिछले सत्र में 90700 रुपये प्रति किलोग्राम पर बंद हुई थी। आइए अपडेटेड प्राइस के बारे में जान लेते हैं।

नई दिल्ली। एचडीएफसी सिक्योरिटीज के अनुसार, मजबूत वैश्विक रुझानों के बीच बुधवार को राष्ट्रीय राजधानी में सोने की कीमत 250 रुपये बढ़कर 72,200 रुपये प्रति 10 ग्राम हो गई। वहीं, चांदी की कीमतें भी 800 रुपये बढ़कर 91,500 रुपये प्रति किलोग्राम हो गईं।

सोने-चांदी में आई तेजी

पिछले सत्र में गोल्ड 71,950 रुपये प्रति 10 ग्राम पर बंद हुआ था। वहीं, चांदी पिछले सत्र में 90,700 रुपये प्रति किलोग्राम पर बंद हुई थी। एचडीएफसी सिक्योरिटीज में कमोडिटीज के वरिष्ठ विश्लेषक सौमिल गांधी ने कहा कि दिल्ली के बाजारों में हाजिर सोने की कीमतें (24 कैरेट) पिछले बंद से 250 रुपये की तेजी के साथ 72,200 रुपये प्रति 10 ग्राम पर कारोबार कर रही हैं।

ग्लोबल मार्केट में रहा ये हाल

अंतरराष्ट्रीय बाजारों में कॉमेक्स में हाजिर सोना 2,315 डॉलर प्रति औंस पर कारोबार कर रहा था, जो पिछले बंद से 12 डॉलर अधिक था। गांधी ने कहा कि बुधवार को सोने ने अपनी बढ़त जारी रखी, जिसे नरम अमेरिकी ट्रेजरी यील्ड और स्थिर अमेरिकी डॉलर से मदद मिली। चांदी भी मामूली बढ़त के साथ 29.35 डॉलर प्रति औंस पर बंद हुई। पिछले सत्र में यह 29.20 डॉलर प्रति औंस पर बंद हुई थी।

उन्होंने कहा कि कमोडिटी मोटे तौर पर एक सीमा में फंसी हुई है और सपाट कारोबार कर रही है, क्योंकि व्यापारी बुधवार को बाद में यूएस सीपीआई नंबर और यूएस फेडरल रिजर्व की नीति बैठक के नतीजों का इंतजार कर रहे हैं।

महंगाई के मोर्चे पर मिली राहत, मई में 4.75 फीसदी रहा रिटेल इन्फ्लेशन; अप्रैल के मुकाबले मामूली गिरावट

परिवहन विशेष न्यूज

महंगाई के मोर्चे पर राहत भरी खबर सामने आई है। मई में भारत की खुदरा मुद्रास्फीति घटकर 4.75% पर आ गई। राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (NSO) द्वारा जारी आंकड़ों के अनुसार मई में खाद्य वस्तुओं की मुद्रास्फीति 8.69 प्रतिशत रही जो अप्रैल में 8.70 प्रतिशत से मामूली कम है। इस महीने खुदरा मुद्रास्फीति 4.89 प्रतिशत रहने का अनुमान लगाया गया है।

नई दिल्ली। लगातार बढ़ रही महंगाई के बीच राहत भरी खबर सामने आई है। सरकारी आंकड़ों के मुताबिक, मई में भारत की खुदरा मुद्रास्फीति घटकर 4.75% रही। बुधवार को जारी सरकारी आंकड़ों के अनुसार, भारत की वार्षिक खुदरा मुद्रास्फीति अप्रैल में 4.83 प्रतिशत से घटकर मई में 4.75 प्रतिशत पर आ गई।

क्या कहते हैं आंकड़े?

राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (NSO) द्वारा जारी आंकड़ों के अनुसार, मई में खाद्य वस्तुओं की मुद्रास्फीति 8.69 प्रतिशत रही, जो अप्रैल में 8.70 प्रतिशत से मामूली कम है। फरवरी 2024 से हेडलाइन मुद्रास्फीति में क्रमिक रूप से कमी देखी गई है। हालांकि, यह फरवरी में 5.1 प्रतिशत से अप्रैल 2024 में 4.8 प्रतिशत तक सीमित रही है।

RBI को मिले ये निर्देश

सरकार ने रिजर्व बैंक को यह सुनिश्चित करने का काम सौंपा है कि सीपीआई मुद्रास्फीति 2 प्रतिशत के मार्जिन के साथ 4 प्रतिशत पर बनी रहे। इस महीने की शुरुआत में आरबीआई ने 2024-25 के लिए सीपीआई मुद्रास्फीति 4.5 प्रतिशत रहने का अनुमान लगाया था, जिसमें पहली तिमाही 4.9 प्रतिशत, दूसरी तिमाही 3.8 प्रतिशत, तीसरी तिमाही 4.6 प्रतिशत और चौथी तिमाही 4.5 प्रतिशत थी।

जीवन बीमा पालिसी पर अनिवार्य रूप से मिलेगी लोन की सुविधा, यहां जानें

पालिसीधारकों को नकदी संबंधी जरूरतों को पूरा करने में मदद मिलेगी। इसके अलावा बच्चों की उच्च शिक्षा और विवाह के लिए पेंशन उत्पादों के तहत आंशिक निकासी की भी सुविधा मिली वन बीमा पालिसी के संबंध में सभी रेगुलेशन को एकीकृत करने वाले मास्टर परिपत्र को बुधवार को जारी करते हुए इरडा ने कहा कि फ्री-लुक अवधि अब 30 दिन है। पहले यह अवधि 15 दिन थी।

नई दिल्ली। भारतीय बीमा विनियामक एवं विकास प्राधिकरण (इरडा) ने सभी जीवन बीमा उत्पादों में ऋण की सुविधा अनिवार्य कर दी है। इससे पालिसीधारकों को नकदी संबंधी जरूरतों को पूरा करने में मदद मिलेगी। जीवन बीमा पालिसी के संबंध में सभी रेगुलेशन को एकीकृत करने वाले 'मास्टर' परिपत्र को बुधवार को जारी करते हुए इरडा ने कहा कि 'फ्री-लुक' अवधि अब 30 दिन है। पहले यह अवधि 15 दिन थी।

'फ्री-लुक' अवधि में पालिसी के नियमों तथा शर्तों की समीक्षा करने के लिए समय दिया जाता है। नया 'मास्टर' परिपत्र सामान्य बीमा पालिसी के लिए नियामक द्वारा की गई इसी प्रकार की प्रक्रिया के बाद आया है।इरडा ने कहा, 'यह बीमा नियामक द्वारा पालिसीधारकों के हितों को ध्यान में रखते हुए उठाए गए सुधारों की सीरीज में एक महत्वपूर्ण कदम है।

आंशिक निकासी की सुविधा

'मास्टर' परिपत्र के अनुसार, पेंशन उत्पादों के तहत आंशिक निकासी की सुविधा की अनुमति दी गई है। इससे पालिसीधारकों को जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं जैसे बच्चों की उच्च शिक्षा या विवाह, आवासीय मकान/फ्लैट की खरीद/निर्माण, चिकित्सकीय व्यय तथा गंभीर बीमारी के उपचार के लिए अपनी विशिष्ट वित्तीय आवश्यकताओं को पूरा करने में मदद मिलेगी।

इरडा ने कहा कि पालिसी को बंद करने के मामले में इसे बंद करने वाले पालिसीधारकों और जारी रखने वाले पालिसीधारकों दोनों के लिए तर्कसंगत और मूल्यपरक राशि सुनिश्चित की जानी चाहिए। परिपत्र में कहा गया, 'यदि बीमा कंपनी बीमा लोकपाल के निर्णय के विरुद्ध अपील नहीं करता है और उसे 30 दिन के भीतर क्रियान्वित नहीं करता है, तो शिकायतकर्ता को प्रतिदिन 5,000 रुपये का जुर्माना देना होगा।'

बीमा कंपनियों से कहा गया कि वे निरंतरता में सुधार लाने, गलत बिक्री पर अंकुश लगाने तथा पालिसीधारकों को वित्तीय नुकसान से बचाने और उनके लिए दीर्घकालिक लाभ बढ़ाने के लिए तंत्र स्थापित करें।

प्राकृतिक गैस को जीएसटी के दायरे में लाने की तैयारी, 2030 तक 15 प्रतिशत करने का लक्ष्य

पेट्रोलियम मंत्री प्राकृतिक गैस को जीएसटी के दायरे में लाने के लिए काम करेंगे। फिलहाल पेट्रोलियम प्रोडक्ट शराब और तंबाकू जीएसटी के दायरे से बाहर हैं। प्राकृतिक गैस भी पेट्रोलियम उत्पाद होने के कारण जीएसटी के दायरे से बाहर है और इस पर केंद्रीय उत्पाद शुल्क और केंद्रीय बिक्री कर के अलावा प्रदेश सरकार वैट लगाती है। वित्त वर्ष 2022-23 में प्राकृतिक गैस पर कुल वैट 200 अरब रुपये था।

नई दिल्ली। पेट्रोलियम मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने कहा है कि वे प्राकृतिक गैस को जीएसटी के दायरे में लाने के लिए काम करेंगे। वर्तमान में सभी तरह के पेट्रोलियम उत्पाद, शराब और तंबाकू जीएसटी के दायरे से बाहर हैं। प्राकृतिक गैस भी पेट्रोलियम उत्पाद होने के कारण जीएसटी के दायरे से बाहर है और इस पर केंद्रीय उत्पाद शुल्क और केंद्रीय बिक्री कर के अलावा प्रदेश सरकार वैट लगाती है।

अर्थव्यवस्था में प्राकृतिक गैस के उपयोग

विशेषज्ञों का मानना है कि अर्थव्यवस्था में प्राकृतिक गैस के उपयोग को बढ़ाने के लिए इस पर तर्कसंगत कर लगाना जरूरी है। सरकार ने देश के एनर्जी बास्केट में प्राकृतिक गैस की हिस्सेदारी को वर्तमान के 6.7 प्रतिशत से बढ़ाकर 2030 तक 15 प्रतिशत करने का लक्ष्य रखा है।

जीएसटी परिषद के फैसले को प्रभावित करने वाले चार प्रमुख राज्यों गुजरात, राजस्थान, उत्तर प्रदेश और आंध्र प्रदेश में अब या तो भाजपा या एनडीए की सरकार है। ये चारों राज्य प्राकृतिक गैस पर लगने वाले वैट के सबसे बड़े लाभार्थी हैं। ऐसे में अगर प्राकृतिक गैस को जीएसटी के तहत लाने का कोई प्रस्ताव आता है तो उसके पारित होने की संभावना अधिक है।

जेफरीज की एक हालिया रिपोर्ट के अनुसार, अगर प्राकृतिक गैस को जीएसटी के दायरे में लाया जाता है, तो इसकी कीमत में 0.8-0.9 डालर प्रति एमएमबीटीयू (ऊर्जा मूल्य मापने की एक इकाई) की कमी आ सकती है। वित्त वर्ष 2022-23 में प्राकृतिक गैस पर कुल वैट 200 अरब रुपये था।

मुस्लिम मुक्त हुई भारत सरकार , आजादी के बाद हुआ ऐसा पहली बार , मुस्लिम समाज से नहीं है कोई भी मंत्री

परिवहन विशेष न्यूज

INDI गठबंधन और लिबरल वर्ग ने मुस्लिमों को बीजेपी के खिलाफ इतना भड़काया कि 1% मुसलमानों ने भी बीजेपी को वोट नहीं दिया

परिणाम NDA से कोई मुस्लिम सांसद नहीं जीता, किसी मुस्लिम को मंत्री नहीं बनाया गया. सरकार में मुस्लिमों का प्रतिनिधित्व पूरी तरह से समाप्त हो गया.

बीजेपी के खिलाफ वोट जिहाद का नुकसान किसे हुआ ?

INDI गठबंधन को ? नहीं

लिबरल वर्ग को ? नहीं

तो फिर किसे हुआ ? जवाब है कि मुसलमानों को हुआ

जब मुस्लिम समाज फतवाधारी बनकर एक पार्टी को हराने के लिए वोट करेगा तो वो पार्टी सत्ता में आने पर पर उन्हें सत्ता में भागीदारी क्यों देगी ?

मुस्लिम समाज को तय करना होगा कि उन्हें वोट जिहाद जैसे फर्जी एजेंडे का शिकार होकर अपना प्रतिनिधित्व शून्य कराना है, या फिर वो करना है जिससे न सिर्फ समाज का बल्कि राष्ट्र का भी हित हो।

मोहन चरण माझी ओडिशा के नए मुख्यमंत्री के रूप में शपथ लेंगे

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड उडीशा

भुबनेस्वर : मंगलवार को राज्य भाजपा विधायक दल की बैठक के निर्णय के बाद क्योंझर सदर विधायक श्री मोहन चरण माझी बुधवार शाम को ओडिशा के नए मुख्यमंत्री के रूप में शपथ लेंगे। इसके साथ ही कनक वर्धन सिंहदेव और पंधी परिदा उप मुख्यमंत्री पद की शपथ लेंगे । शपथ ग्रहण समारोह में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी समेत पांच राज्यों के मुख्यमंत्री और राज्य के वरिष्ठ बीजेपी नेता और कार्यकर्ता मौजूद रहेंगे ।

हालांकि, नवनिर्वाचित विधायकों को फोन कर बताया गया है कि नई सरकार के मंत्री भी शपथ लेंगे । विशेष सूत्रों के अनुसार, कैबिनेट मंत्री सुरेश पुजारी (ब्रजराजनगर), रबीनारायण नाइक (कुचिंडा), नित्यानंद गोंड (उमेरकोट), कृष्णचंद्र पात्र (ढेंकनाल), पृथ्वीराज हरिचंदन (चिलिका), डॉ. मुकेश महालिंग (लोइसिंघा), बिभी भूषण जेना हैं। (गोपालपुर) और कृष्णचंद्र महापात्र (मोर्डा) के कैबिनेट मंत्री के रूप में शपथ लेने की बात कही जा रही है। इसी तरह गणेश रामसिंह खुंटिया (यशीपुर), सूर्यसुल्ही सूरज (धामनगर), प्रदीप बालासामंत, गोकुलानंद मलिक और संपद कुमार स्वावे राष्ट्रीय मंत्री पद की शपथ लेंगे।

महेश नवमी के अवसर पर लगेगा चारभुजा नाथ के छप्पन भोगअभिषेक एवं भजन सरिता का आयोजन भी होगा

परिवहन विशेष अनूप कुमार शर्मा, भीलवाड़ा। श्री माहेश्वरी समाज श्री चारभुजा जी मंदिर ट्रस्ट के बडा मंदिर में महेश नवमी जयेष्ट शुक्ल नवमी, श्री हर जयंती के अवसर पर प्रातः 9 से 12 बजे तक छप्पन भोग दर्शन एवं भजन सरिता का विशेष आयोजन किया जाएगा, ट्रस्ट मीडिया प्रभारी महावीर समदानी ने बताया की महेश नवमी के पावन अवसर पर विशेष आयोजन किया जाएगा पूरे मंदिर परिसर को सजाया जाएगा यह आयोजन हर वर्ष की भांति शांतिलाल, सत्यनारायण, संजय, रीना डाड की ओर से होगा चारभुजा नाथ के प्रातः 5:30 से 6:30 तक दुग्ध अभिषेक, दोपहर 11 बजे ध्वजा पताका अर्पण होगी ,तत्पश्चात महा आरती के बाद चारभुजा नाथ को छप्पन भोग धराया जाएगा आरती प्रसाद प्रसाद वितरण होगा आयोजन में श्रीनगर माहेश्वरी सभा सहित श्री माहेश्वरी समाज बड़ा मंदिर ट्रस्ट के पदाधिकारी उपस्थित रहेंगे।

मोतीलाल मुणोत की स्मृति में विभिन्न गौशाओं में 51लाख रूपये की दी सहयोग राशि

बेंगलूरू: अमृतधारा गौशाला दिनेपालिया में बुधवार को मोतीलाल मुणोत की स्मृति में उनके परिजनों ने गो पूजन एवं वृक्षारोपण से कार्यक्रम का शुभारंभ किया। हेसरघट्टा गोडिया मठ के संत दंडी महाराज एवं प्रभुपाद गौशाला के प्रमुख आनंद कृष्ण दास ने गौ माता की उपयोगिता पर प्रकाश डाला. महेंद्र, सुरक्षा, हंसराज, आनंद मुणोत ने विभिन्न गौशालाओं को 51 लाख रुपए की सहयोग राशि के चेक वितरित किए. इस अवसर पर शिव गौ सेवा मंडल चैरिटेबल ट्रस्ट के मोतीलाल माली ,हनुमान माली, अमृतधारा गौशाला के प्रमुख बिजे शर्मा, सर्वा की प्रमुख डॉक्टर जयश्री, कुपा के सदस्य जगदीश ,ज्ञान फाउंडेशन से मुकुंद एवं गौतम शर्मा, कृष्ण गौशाला कोतनूर, भारतीय गो परिवार अरसिकेरे, भगवान महावीर गौशाला बाणवार, कामधेनु गौशाला चिकमगलूर, पिंजरापोल गौशाला टी नरसिंहपुर, ओमकार गौशाला शिवगंगा के प्रतिनिधि , रमसा एवं बड़ी संख्या में गोभक्त उपस्थित थे. उपेंद्र कुमार ने सभी गो भक्तों को सम्मानित किया। महेंद्र मुणोत ने अपने वक्तव्य में कहा हम अपनी मां के दूध का कर्ज तो नहीं चुका सकते लेकिन गौ सेवा एवं गौ रक्षा के प्रयास से गाय के दूध का कर्ज तो चुका सकते हैं। उन्होंने यह भी कहा की गौशाला मे गायों की सेवा करते वक्त देसी नस्ल एवं विदेशी नस्ल की गायों में भेद न करें ।

विश्व खाद्य सुरक्षा दिवस विशेष - अपील - समाज के सभी लोगों को मिलकर भोजन की बर्बादी रोकने के लिये सामाजिक चेतना लानी चाहिए

हमें अपने घर परिवार के बच्चों में बचपन से यह आदत डालनी होगी कि जितनी भूख हो उतना ही खाना लें : राष्ट्रवादी चिंतक राजेश खुराना

संयुक्त राष्ट्र संघ ने विश्व स्वास्थ्य संगठन और खाद्य और कृषि संगठन को दुनिया भर में खाद्य सुरक्षा को बढ़ावा देने के प्रयासों का नेतृत्व करने और पौष्टिक खाने के प्रति लोगों को जागरुक करने की जिम्मेदारी दी है। इस दिन को मनाने के पीछे खाद्य सुरक्षा के प्रति लोगो को जागरूक करने का उद्देश्य हैं। क्योकि खराब भोजन का सेवन करने की वजह से गंभीर रोगों के शिकार बन जाते हैं। वहीं, भोजन की कमी व दूषित भोजन खाने से प्रतिवर्ष हजारों लोगों की जान चली जाती है।

छटवें विश्व खाद्य सुरक्षा दिवस के अवसर पर वरिष्ठ समाजसेवी राष्ट्रवादी सामाजिक चिंतक राजेश खुराना ने सर्व समाज से अपील करते हुए कहा कि आपने कभी सोचा है कि हम जो जूठन छोड़ देते हैं। उससे हम कितने गरीबों का पेट भर सकते है। देश में एक तरफ करोड़ो लोग खाने को मोहताज है। वहीं, लाखों टन खाना प्रतिदिन बर्बाद किया जा रहा है। भारत में हर वर्ष जितना भोजन तैयार होता है उसका एक तिहाई बर्बाद चला जाता है। विश्व खाद्य संगठन के अनुसार देश में हर साल पचास हजार करोड़ रूपये का भोजन बर्बाद चला जाता है। एक ऑकलन के मुताबिक बर्बाद होने वाले भोजन की धनराशि से पांच करोड़ बच्चों की जिदगी संवारीं जा सकती है। हमारी लापरवाही के कारण पैदा किए जाने वाले अनाज का एक तिहाई हिस्सा बर्बाद कर दिया जाता है। बर्बाद जाने वाला भोजन इतना होता है कि उससे करोड़ो लोगों की खाने की जरूरत पूरी हो सकती है। इस गंभीर विषय पर सामाजिक जागरूकता बढनी चाहिए। राष्ट्रहित में हमारी सभी से अपील हैं कि समाज के सभी लोगों को मिलकर भोजन की बर्बादी रोकने के लिये सामाजिक चेतना लानी चाहिए। तभी भोजन की बर्बादी रोकने का अभियान सफल हो पायेगा। हमारे देश में अनाज को अन्नदेव का दर्जा प्राप्त है। यही कारण है कि हमारे देश में भोजन झूठा छोडना या उसका अनादर करना पाप माना जाता है। मगर आधुनिकता के चक्कर में हम अपने पुराने संस्कार भूल गए हैं। हमारे यहां शादियों, उत्सवों या त्यौहारो में होने वाली भोजन की बर्बादी से हम सब वाकिफ हैं। भोजन को बर्बाद करना गरीबों के साथ अन्याय व समाजद्रोह समान है। इसलिए हमें अपने घर परिवार के बच्चों में बचपन से यह आदत डालनी होगी कि जितनी भूख हो उतना ही खाना लो। एक - दूसरे से बांट कर खाना भी भोजन की बर्बादी को बड़ी हद तक रोक सकता है। भोजन की बर्बादी रोकने के लिए हमें अपनी आदतों को सुधारने की जरूरत है। धार्मिक लोगों एवं स्वयंसेवी संगठनों को भी इस दिशा में पहल करनी चाहिए।

श्री खुराना ने आगे कहा कि जरा सोचिये इससे कितने गरीबो का पेट भर सकता हैं। इसलिए भोजन बर्बाद नहीं करना चाहिए। कृपया भोजन का अनादर न करें। भोजन अपने थाली में उतना ही लें जितना खा सकें। भोजन बर्बाद ना करें और पाश्चात्य संस्कृति से बचें और अपनी संस्कृति पर गर्व करें। एक रिपोर्ट में खुलासा हुआ है कि भारत में बढ़ती सम्पन्नता के साथ ही लोग खाने के प्रति असंवेदनशील हो रहे हैं। खर्च करने की क्षमता के साथ ही खाना फेंकने की प्रवृत्ति बढ़ रही है। विश्व खाद्य एवं कृषि संगठन द्वारा जारी रिपोर्ट में कहा गया है कि खाद्य अपव्यय को रोके बिना खाद्य सुरक्षा सम्भव नहीं है। इस रिपोर्ट में वैश्विक खाद्य अपव्यय का अध्ययन पर्यावरणीय दृष्टिकोण से करते हुए बताया है कि भोजन के अपव्यय से जल, जमीन और जलवायु के साथ साथ जैव-विविधता पर भी बेहद नकारात्मक असर पड़ता है। हमारे देश में हर साल उतना गेहूं बर्बाद होता है, जितना आस्ट्रेलिया की कुल पैदावार है। नष्ट हुए गेहूं की कीमत लगभग 50 हजार करोड़ रुपये होती है और इससे 30 करोड़ लोगों को सालभर भरपेट खाना दिया जा सकता है। हमारे देश में 2.1 करोड़ टन अनाज केवल इसलिए बर्बाद हो जाता है। क्योंकि उसे रखने के लिए हमारे पास पर्याप्त भंडारण की सुविधा नहीं है। औसतन हर भारतीय एक साल में छह से 11 किलो अन्न बर्बाद करता है। साल में जितना सरकारी खरीदी का धान व गेहूं खुले में पड़े होने के कारण नष्ट हो जाता है। उतनी राशि से गांवो में पांच हजार वेयर हाउस बनाए जा सकते हैं। अक्सर हम कई अवसरों पर ढेर सारा खाना कचरे में फेंक है। शादियों में खाने की बर्बादी को लेकर भारत सरकार भी चिंतित है। खाद्य मंत्रालय ने कहा है कि वह शादियों में मेहमानों की संख्या के साथ ही परोसे जाने वाले व्यंजनों की संख्या सीमित करने पर विचार कर रहा है। इस बारे में विवाह समारोह अधिनियम, 2006 कानून भी बनाया गया है। भोजन की बर्बादी रोकने हेतु हमारा डॉ मोहन भागवतजी, मोदीजी और योगी से अनुरोध हैं कि इस कानून का कड़ाई से पालन किया जाना चाहिए।

ओड़िशा कोंग्रेस प्रदेश अध्यख्य शरत पटनायक कोंग्रेस को डूबा दिया : मानस चौधूरी

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड उडीशा

भुबानेश्वर : प्रदेश कांग्रेस में निष्कासन महोत्सव चल रहा है। चुनाव में पार्टी के खराब प्रदर्शन को लेकर अगर शीर्ष नेतृत्व पर निशाना साधा गया तो पार्टी को फटकार लगेगी । पिछले हफ्ते छह नेताओं को पार्टी से निकाला जा चुका है । पार्टी में इस बात की चर्चा जोरों पर है कि कुछ और नेताओं को भी निकाला जा सकता है ।मौजूदा विधानसभा चुनाव में कांग्रेस की सीटों की संख्या में इजाफा हुआ है । पार्टी में अब 14 विधायक हैं । इसके अलावा, कोरापुट के सांसद सप्तगिरी उल्लाका ने दूसरी बार जीत हासिल की है। बीजेपी-बीजेडी गठबंधन में उम्मीद थी कि कांग्रेस मौजूदा चुनाव में अच्छा प्रदर्शन करेगी । पीसीसी अध्यक्ष शरत पटनायक ने भी 9 से 90 तक फोन किया । पिछले चुनाव की तुलना में पार्टी में विधायकों की संख्या में मामूली बढ़ोतरी हुई है । टीम के भीतर इस बात को लेकर कीचड़ उछालना शुरू हो गया कि टीम ने खराब प्रदर्शन क्यों किया । 6 जून को चुनाव नतीजे आने के बाद प्रभारी अजय कुमार ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा था कि पार्टी का विरोध करने वालों पर कार्रवाई होगी ।

सबसे पहले शिकार बने कटक जिला कांग्रेस अध्यक्ष मानस चौधरी । उन्हें 6 साल के लिए पार्टी से निकाल दिया गया । निष्कासन के बाद श्री चौधरी ने पीसीसी अध्यक्ष शरत पटनायक और चेयरमैन अजय कुमार पर जमकर निशाना साधा । एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में उन्होंने आरोप लगाया कि अध्यक्ष पार्टी के खराब प्रदर्शन और बिजेड़ी नेताओं से पैसे लेकर टिकट बदलने में शामिल थे ।इसी तरह, संपादक मुहम्मद अकबर खान ने बलांगीर में टीम के प्रदर्शन पर सवाल उठाए ।

पीसीसी अध्यक्ष और वरिष्ठ नेता नरसिम्हा ने प्रेस कॉन्फ्रेंस कर मिश्रा पर निशाना साधा । यह भी अफवाह है कि उन्हें पार्टी से 6 साल के लिए निष्कासित कर दिया गया है। इसके अलावा नरेश मोहंती, दीपक सोरेन, डी. माधवी और सुकांत दास को भी इसी तरह पार्टी से बर्खास्त किया गया है । पार्टी ने कहा है कि उन्हें अव्यवस्थित आचरण और पार्टी विरोधी गतिविधियों के लिए निष्कासित किया गया है । निष्कासित नेता नरेश मोहंती ने कहा, उन्हें कारण बताओ नोटिस जारी नहीं किया गया है । अनुशासन समिति के अध्यक्ष प्रशात सिंह सलूजा ने कहा कि उन्हें इस बारे में कुछ नहीं पता । चुनाव से पहले विधायक मोहम्मद मोकिम को पार्टी से निकाले जाने का मैंने विरोध किया था । श्री मोहंती ने कहा, शायद पीसीसी अध्यक्ष ने अपनी पुरानी नाराजगी दूर कर ली है ।

श्री लिलडीया भेरुजी आईमाता जी सोऽहम आश्रम में पुलिस महानिदेशक सन्तोष कुमार आई पी एस का सम्मान समारोह कार्यक्रम आयोजित

परिवहन विशेष न्यूज

तामिलनाडु पेरीयपालीयम स्थिति आश्रम में तामीलनाडु भष्ट्राचार रोक थाम वह निगरानी विभाग के पुलिस महानिदेशक सन्तोशकुमार आई पी एस का श्री लिलडीया भेरुजी आईमाताजी सोऽहम आश्रम पेरीयपालीयम कि तरफ से आश्रम के संचालक स्वामी तेजानन्द ने आश्रम बनने के बाद पहली बार आश्रम पधारने के लिए भव्य स्वागत किया गया इस कार्यक्रम में तामीलनाडु पॉन ब्रोकर ऐवम ज्वेलर्स एसोसिएशन के प्रदेश महासचिव एस नरेशपुरी गोस्वामी सघंठन के प्रदेश संस्थापक आर जयराम देवासी सघंठन के आवडी शाखा के अध्यक्ष सोहनलाल प्रजापत, सघंठन के आवडी शाखा कोषाध्यक्ष मगंलाराम सीरवी सघंठन के तिरुवलुर ईष्ट जिला अध्यक्ष एस महावीरचन्द कटारिया जैन, सघंठन वेस्ट जिला सचिव नेमीचन्द जाट , श्री लिलडीया भेरुजी के सेवक इन्द्रचन्द परिहार , एल दुर्गाराम परिहार, केरारामजी हाम्बड़, देवमिश्रा , मांगीलाल गेहलोत , सघंठन के युवा मोर्चा के प्रदेश सचिव रमेश भायल सीरवी , गणमान्य भक्त उपस्थित रहे ।

मौसमी बीमारी से बचाव व रोकथाम के लिए चिकित्सकों द्वारा जिले में बेहतर प्रयास किये जाये - जिला कलक्टर

परिवहन विशेष अनूप कुमार शर्मा

शाहपुरा जिला स्वास्थ्य समिति की बैठक बुधवार को जिला कलक्टर राजेंद्र सिंह शेखावत की अध्यक्षता में जिला कलेक्ट्रेट सभागार में आयोजित हुई। बैठक के दौरान जिला कलक्टर ने स्वास्थ्य सेवाओं पर गंभीरता से काम नहीं करने वाले और कम प्रगति वाले प्रभारी चिकित्सा अधिकारियों व कार्मिकों को अपने काम में सुधार लाने के निर्देश दिये। बैठक में जिला कलक्टर ने मौसमी बीमारियों से बचाव व रोकथाम के लिए फिल्ड में जागरूकता फैलाने के साथ-साथ अस्पतालों में कार्यरत चिकित्सकों को बेहतर प्रबंधन कर आमजन को गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध करवाने के निर्देश दिये।

जिला कलेक्टर शेखावत ने कहा कि आम आदमी को सरकारी योजनाओं एवं कार्यक्रमों का अधिक से अधिक लाभ मिले इसके लिए प्रभारी चिकित्सा अधिकारी सहित समस्त मेडिकल स्टाफ को नियमित रूप से अपने कार्यस्थल पर उपस्थित होकर पूरे दायित्व के साथ काम करना होगा। जिला कलक्टर ने कहा कि कार्यस्थल पर चिकित्सकों व कार्मिकों की अनुपस्थिति को कतई बर्दाश्त नही किया जायेगा।

बैठक में मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ0 वि डी मीणा द्वारा हेल्थ इंडिकेटर्स पर पीपीटी के माध्यम से विस्तृत जानकारी प्रदान की। रिपोर्ट देखने के बाद जिला कलक्टर शेखावत ने कहा कि जिले का सरकारी स्तर पर चिकित्सकीय ढांचे को और अधिक मजबूत किया जाए। इसके लिए चिकित्सा अधिकारियों व कार्मिकों को चिकित्सा सेवा को पुनित कार्य समझकर लोगों को चिकित्सा सेवाओं का लाभ गुणवत्तापूर्ण तरिके से दिया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि गांव ढाणी स्तर तक चिकित्सा सुविधाओं को और अधिक मजबूत किया जाना चाहिए। गांवों में विशेषकर इन दिनों मौसमी बीमारियों की रोकथाम को लेकर मजबूत स्वास्थ्य प्रबंधन स्थापित किया जाए।

बैठक के दौरान मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ0 वि डी मीणा ने विभिन्न स्वास्थ्य कार्यक्रमों पर विस्तार से चर्चा करते हुए पूर्व पालना रिपोर्ट तथा विभिन्न स्वास्थ्य कार्यक्रमों की प्रगति रिपोर्ट के बारे में जिला कलेक्टर को अवगत करवाया। उन्होंने निर्देश दिए कि सभी खंड मुख्य चिकित्सा अधिकारी अपने क्षेत्र के स्वास्थ्य केंद्रों का निरीक्षण कर वहां स्वास्थ्य सेवाओं से जुड़ी व्यवस्थाओं का जायजा लें और यदि कहीं कमी पाई जाए तो आवश्यक सुधार करवाया जाए।

बैठक के दौरान पीएमओ डॉ0 अशोक जैन सहित कार्यालय के अन्य अनुभाग अधिकारी एवं अन्य विभागों के अधिकारीगण खण्ड स्तर से समस्त बीसीएमओ, बीपीएम, सीएचसी/पीएचसी इंचार्ज एवं अन्य स्वास्थ्य कार्मिक उपस्थित रहे।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095 . newstransportvishesh@gmail .com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी .आर .बी . एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023